

पात्र

रानेव्स्काया, ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (ल्यूबा) - ज़मींदारिन

आन्या - उसकी १७ वर्षीया बेटी

वार्या - उसकी २४ वर्षीया दत्तक पुत्री

गायेव, लेओनीद अन्द्रेयेविच - रानेव्स्काया का भाई

लोपाखिन, येर्मोलाई अलेक्सेयेविच - व्यापारी

त्रोफ़ीमोव, प्योत्र सेर्गेयेविच (पेट्या) - विद्यार्थी

सिमेओनोव-पीश्चक, बोरीस बोरीसोविच - ज़मींदार

शर्लोत्ता इवानोव्ना - शिक्षिका

येपिखोदोव, सेम्योन पनतेलेयेविच - क्लर्क

दुन्याशा - नौकरानी

फ़ीर्स - ८७ वर्षीय बूढ़ा अर्दली

याशा - नौजवान अर्दली

राहगीर

स्टेशन मास्टर

डाकखाने का कर्मचारी

मेहमान, नौकर-चाकर

(घटना-स्थल - रानेव्स्काया की जागीर)

पहला अंक

(कमरा, जिसे अभी तक बच्चों का कमरा कहा जाता है। उसका एक दरवाजा आन्या के कमरे की ओर है। जल्द ही सूरज निकल आयेगा। मई का महीना शुरू हो चुका है, चेरी के पेड़ों पर फूल आये हुए हैं, किन्तु बारा में ठण्ड है, सुबह का पाला पड़ रहा है। कमरे की खिड़कियां बन्द हैं।)

(दुन्याशा मोमबत्ती और लोपाखिन हाथ में किताब लिये हुए आते हैं)

लोपाखिन : शुक्र है भगवान का, गाड़ी आ गयी। क्या वक्त हुआ है ?

दुन्याशा : जल्द ही दो बज जायेंगे। (मोमबत्ती बुझा देती है)
उजाला हो गया है।

लोपाखिन : कितनी देर से आई है गाड़ी ? ज्यादा नहीं तो दो घण्टे तो जरूर ही। (जम्हाई और अंगड़ाई लेता है) मैं भी एक ही हज़रत हूं, खासा उल्लू ! खास तौर पर इसलिये यहां आया कि उन्हें स्टेशन पर लेने जाऊंगा और अचानक सोया ही रह गया ... बैठे-बैठे ही सो गया। कितनी बुरी बात है ... तुम ही मुझे जगा देतीं।

दुन्याशा : मैंने तो सोचा कि आप स्टेशन पर चले गये हैं।
(ध्यान से सुनती है) लगता है कि वे आ रहे हैं।

लोपाखिन (कान लगाकर सुनता है) : नहीं ... अभी तो उन्हें सामान लेने और इधर-उधर की भुटपुट बातों में वक्त लगेगा ...

(खामोशी)

पांच साल विदेश में बिताकर लौट रही हैं ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना। कौन जाने, अब वे कैसी हो गयी होंगी ... बहुत भली महिला हैं। अच्छे मिज़ाज की, सीधी-सादी। मुझे याद है कि जब मैं पन्द्रह साल का था तो मेरे स्वर्गीय पिता ने, जिनकी उस समय इस गांव में छोटी-सी दुकान थी, मेरे मुंह पर जोर से घूसा दे मारा था। मेरी नाक से खून बहने लगा था ... हम दोनों उस वक़्त किसी काम से यहां अहाते में आये थे और पिता जी खूब पिये हुए थे। मुझे यह ऐसे ही याद है, मानो कल की बात हो। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना तब युवती ही थीं, बड़ी दुबली-पतली। वह मुझे यहां, इसी बच्चों के कमरे में मुंह धुलाने के लिये ले आयीं। बोलीं: “रो नहीं देहाती छोकरे, शादी के दिन तक तो ज़रूर तेरी नाक ठीक हो जायेगी ...”

(लामोशी)

देहाती छोकरा ... यह सच है कि मेरे पिता ठेठ देहाती थे, लेकिन मैं सफ़ेद वास्कट और पीले, बढ़िया जूते पहने हूं। क्या ठाठ हैं मेरे ... बस, इतना ही है कि अमीर हूं, पैसे बहुत हैं, लेकिन अगर सोचा जाये, ज़रा गहराई में जाया जाये तो देहाती का देहाती ही हूं ... (किताब के पन्ने उलटता है) इस किताब को पढ़ रहा था और खाक भी नहीं समझा। पढ़ते-पढ़ते ही सो गया।

(लामोशी)

दुन्याशा: और कुत्ते रात भर नहीं सोये। महसूस करते हैं कि मालिक लोग आ रहे हैं।

लोपाख़िन: अरी दुन्याशा, यह तुम कैसी घबरायी-सी लग रही हो ...

दुन्याशा : मेरे हाथ कांप रहे हैं। मैं तो बेहोश हो जाऊंगी।

लोपाखिन : बड़ी नाजुक हो तुम दुन्याशा। पहनती-ओढ़ती भी रईसजादियों की तरह और बाल भी उन्हीं की तरह बनाती हो। यह ठीक नहीं। आदमी को अपनी असलियत को नहीं भूलना चाहिये।

(गुलदस्ता लिये हुए येपिखोदोव आता है। वह कोट और घुटनों तक के बेहद चरमरानेवाले चमचमाते जूते पहने है। मंच पर आते हुए उसके हाथ से गुलदस्ता गिर जाता है)

येपिखोदोव (गुलदस्ता उठाता है) : यह माली ने भेजा है। उसका कहना है कि इसे खाने के कमरे में सजाया जाये। (दुन्याशा को गुलदस्ता देता है)

लोपाखिन : और मेरे लिये क्वास * भी लेती आना।

दुन्याशा : जी, अच्छी बात है। (जाती है)

येपिखोदोव : अभी बड़ी ठंडक है, तीन डिग्री का पाला है, मगर चेरी के पेड़ों पर फूल ही फूल हैं। अपने यहां के जलवायु को मैं अच्छा नहीं कह सकता। (आह भरकर) हां, नहीं कह सकता। वह हमारी मदद नहीं करता। येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, आप मुझे यह बताने की अनुमति दीजिये कि तीन दिन पहले मैंने अपने लिये ये जूते खरीदे थे और आपको यह विश्वास दिलाने का साहस कर सकता हूं कि ये ऐसे चरमराते हैं कि भगवान बचाये। कौन-सा तेल लगाऊं इनमें ?

लोपाखिन : मेरा सिर नहीं खाओ। तुम्हारी वजह से नाक में दम है।

* कूट की रोटी से बनाया जानेवाला खमीरी पेय जिसका ज़ायका कुछ हद तक कोका-कोला जैसा होता है। - अनु०

येपिखोदोव : मुझ पर तो हर दिन ही कोई न कोई मुसीबत आती रहती है। लेकिन मैं शिकवा-शिकायत नहीं करता, इसका आदी हो गया हूं, यहां तक कि मुस्कराता भी हूं।

(दुन्याशा आती है, लोपाखिन को क्वास देती है)

तो मैं चलता हूं। (कुर्सी से टकरा जाता है जो गिर जाती है) यह लीजिये ... (मानो कोई बड़ी जीत हासिल की हो) देख रहे हैं न। ऐसा कहने के लिये माफ़ी चाहता हूं, लेकिन यह भी एक ऐसी ही घटना है ... वैसे, यह तो खूब रही ! (जाता है)

दुन्याशा : येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, आपको यह बाताऊं कि येपिखोदोव ने मुझसे शादी का प्रस्ताव किया है।

लोपाखिन : सच !

दुन्याशा : समझ में नहीं आता कि मैं क्या फ़ैसला करूं ... आदमी तो वह बहुत भला है, लेकिन कभी-कभी जब बोलने लगता है तो कुछ भी हाथ-पल्ले नहीं पड़ता। ब्वातें उसकी अच्छी होती हैं, मन को छूती हैं, मगर समझ में नहीं आतीं। मुझे भी वह मानो अच्छा ही लगता है और वह तो मेरे प्यार में पागल ही है। आदमी वह बदकिस्मत है, हर दिन ही कोई न कोई बुरी बात होती रहती है उसके साथ। हमारे यहां सभी उसे 'नित नई मुसीबत' कहकर चिढ़ाते रहते हैं ...

लोपाखिन (कान लगाकर सुनते हुए) : लगता है कि आ रहे हैं ...

दुन्याशा : आ रहे हैं ! मुझे यह क्या हो रहा है ... मेरे हाथ-पांव ठण्डे हुए जा रहे हैं।

लोपाखिन : सचमुच आ रहे हैं। आओ, बाहर चलकर स्वागत करें। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना मुझे पहचानेंगी या नहीं ? पांच साल हो गये मिले हुए।

दुन्याशा (अत्यधिक घबराहट से) : मैं तो अभी बेहोश होकर गिर जाऊंगी ... हाय , अभी गिर जाऊंगी !

(दो बगिचों का घर के पास आना सुनाई देता है। लोपाखिन और दुन्याशा जल्दी से बाहर जाते हैं। मंच खाली रह जाता है। बगल के कमरों में शोर-गुल सुनाई देने लगता है। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना का स्वागत करने के लिये स्टेशन पर जानेवाला फ़ीर्स अपनी छड़ी पर झुका हुआ तेज़ी से मंच पार करता है। वह पुराने ढंग की वर्दी और ऊँचा टोप पहने है, अपने आपसे कुछ बातें कर रहा है, मगर उसका एक भी शब्द समझ पाना सम्भव नहीं। नेपथ्य में शोर बढ़ता जाता है। एक आवाज़ सुनाई देती है : “ आइये , यहां से चलें ... ” ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना , आन्या और जंजीर से बंधे कुत्ते के साथ शर्लोत्ता इवानोव्ना का प्रवेश। सभी सफ़री कपड़ों में हैं। वार्या ओवरकोट पहने है और सिर पर रुमाल बांधे है। गायेव , सिमेओनोव-पीश्चक , लोपाखिन , गठरी और छतरी लिये दुन्याशा तथा चीजें उठाये हुए नौकर-चाकर कमरे में से गुज़रते हैं।)

आन्या : आइये , यहां से चलें। अम्मां , तुम्हें याद है कि यह कौन-सा कमरा है ?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (खुशी से , आंखों में आंसू लाते हुए) : बच्चों का कमरा !

वार्या : कितनी ठण्ड है , मेरे तो हाथ अकड़ गये। (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से) आपका सफ़ेद और बैंगनी — ये दोनों कमरे वैसे के वैसे ही हैं अम्मां।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : बच्चों का कमरा , मेरा प्यारा , मेरा बहुत ही अच्छा कमरा ... मैं जब छोटी थी तो यहीं सोती थी। (रोती है) और अब भी मानो मैं बच्ची ही हूं ... (अपने

भाई, वार्या और फिर भाई को चूमती है) और वार्या तो पहले जैसी ही है, संन्यासिनी-सी लगती है। दुन्याशा को भी मैंने पहचान लिया ... (दुन्याशा को चूमती है)

गायेव : गाड़ी दो घण्टे देर से आयी। क्यों, कैसी रही ? क्या ख्याल है हमारे यहां की व्यवस्था के बारे में ?

शर्लौत्ता (पीश्चिक से) : मेरा कुत्ता तो गिरियां भी खाता है।

पीश्चिक (हैरान होते हुए) : ज़रा ग़ौर कीजिये !

(आन्या और दुन्याशा को छोड़कर सभी चले जाते हैं)

दुन्याशा : आखिर आप आ ही गयीं ... (आन्या का ओवरकोट और टोपी उतारती है)

आन्या : मैं रास्ते में चार रातें नहीं सोयी ... अब बहुत ठण्ड लग रही है।

दुन्याशा : आप लेण्ट के वक़्त यहां से गयी थीं। तब बर्फ़ गिर रही थी, पाला पड़ रहा था और अब ? ओह, मेरी प्यारी ! (हंसती है, उसे चूमती है) राह देखते-देखते आंखें थक गयीं मेरी खुशी, मेरी आंखों की रोशनी ... मैं अभी आपको बता दूंगी, एक मिनट भी यह बात अब दिल में नहीं रख सकती ...

आन्या (बेमन से) : फिर कोई क्रिस्सा ...

दुन्याशा : क्लर्क येपिखोदोव ने ईस्टर के बाद मुझसे शादी का प्रस्ताव किया।

आन्या : तुम तो एक ही राग अलापा करती हो ... (बाल ठीक करते हुए) मेरे बालों के सारे पिन खो गये ... (वह बेहद थकी हुई है, लड़खड़ाती भी है)

दुन्याशा : मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं। वह मुझे प्यार करता है, बेहद प्यार करता है।

आन्या (अपने कमरे के दरवाज़े की ओर देखते हुए, प्यार

से) : मेरा कमरा, मेरी खिड़कियां, मानो मैं तो यहां से कभी गयी ही नहीं। मैं घर लौट आयी ! कल सुबह उठते ही बाग में भागी फिरुंगी ... ओह, काश मुझे नींद आ जाती ! मैं रास्ते भर नहीं सो सकी, बेचैनी से मेरा बुरा हाल रहा।

दुन्याशा : प्योत्र सेग्येविच को यहां आये तीन दिन हो गये।

आन्या (खुशी से) : पेत्या आ गया !

दुन्याशा : गुसलखाने में सो रहे हैं, वहीं रहते हैं। कहते हैं, मैं उन लोगों को परेशान नहीं करना चाहता। (अपनी जेब-घड़ी पर नज़र डालती है) वैसे तो उन्हें जगा देना चाहिये, लेकिन वर्वारा मिखाइलोव्ना ने मना कर दिया है। बोलों : “ तुम उसे नहीं जगाना। ”

(कमर पर चाबियों का गुच्छा लटकाये वार्या आती है)

वार्या : दुन्याशा, भटपट कॉफी लाओ ... अम्मां ने कॉफी मांगी है।

दुन्याशा : अभी लाती हूं। (जाती है)

वार्या : शुक्र है भगवान का, तुम और अम्मां आ गयीं। तुम फिर से घर पर हो। (उसे सहलाती है) मेरी लाड़ली आ गयी ! मेरी सुन्दरी लौट आयी !

आन्या : उफ़, कितना कुछ सहन करना पड़ा है।

वार्या : मैं कल्पना कर सकती हूं !

आन्या : मैं लेण्ट के वक्त यहां से गयी थी, तब ठण्ड थी। शर्लोत्ता रास्ते भर सिर खाती और खेल-तमाशे दिखाती रही। तुमने शर्लोत्ता को मेरे गले का हार क्यों बना दिया था ...

वार्या : मेरी गुड़िया, मैं तुम्हें अकेली कैसे भेज सकती थी। सत्रह साल की उम्र में !

आन्या : हम पेरिस पहुंचीं, वहां ठण्ड थी, बर्फ गिर रही

थी। फ्रांसीसी मैं इतनी भयानक बोलती हूं कि कुछ पूछो नहीं। अम्मां पांचवीं मंज़िल पर रहती हैं, वहां गयी तो अम्मां के यहां कुछ फ्रांसीसी मर्द-औरतें मेहमान बैठे थे, किताब लिये एक बूढ़ा पादरी था, तम्बाकू का धुआं, बू और गड़बड़ थी। मुझे अचानक अम्मां पर तरस आया, इतना ज़्यादा तरस आया कि देर तक उन्हें बांहों में भरे रही, अपने से अलग नहीं कर पायी। अम्मां बाद में मुझे सहलाती रहीं, रोती रहीं...

वार्या (डबडबाई आंखों से) : यह सब नहीं बताओ, नहीं बताओ ...

आन्या : अम्मां ने मेन्तोनवाला अपना बंगला बेच दिया है, उनके पास अब कुछ भी नहीं रहा, कुछ भी नहीं। मेरे पास भी फूटी कौड़ी नहीं है, बड़ी मुश्किल से हम यहां तक पहुंचे हैं। अम्मां कुछ समझती ही नहीं थीं! हम किसी स्टेशन पर खाना खाने बैठते तो वह सबसे महंगी चीज़ें मंगवातीं और बैरों को रूबल तक की बख्शीश देतीं। शर्लॉत्ता भी ऐसा ही रवैया अपनाती। याशा भी इसी तरह का बढ़िया खाना मांगता। बड़ी मुसीबत थी। बात यह है कि याशा अब अम्मां का अर्दली है, हम उसे साथ ले आये हैं।

वार्या : मैंने उस बदमाश को देखा है।

आन्या : तो यहां का क्या हालचाल है? ब्याज चुका दिया?

वार्या : कहां से चुकाते?

आन्या : हे भगवान, हे भगवान ...

वार्या : अगस्त में जागीर बिक जायेगी ...

आन्या : हे भगवान ...

लोपाख़िन (दरवाज़े से झांककर गाय की तरह रम्भाता है) :
म्हां ढ़ढ़ढ़ (चला जाता है)

वार्या (डबडबाई आंखों से, लोपाख़िन की दिशा में घूंसा

दिखाते हुए) : कसकर मारती कमबख्त के मुंह पर ...

आन्या (वार्या को बांहों में भरकर, धीमी आवाज़ में) : वार्या, उसने तुमसे शादी का प्रस्ताव किया या नहीं? (वार्या सिर हिलाकर इन्कार करती है) वह तो तुम्हें प्यार करता है न ... तो तुम दोनों शादी के बन्धन में क्यों नहीं बंध जाते, किस बात का इन्तज़ार है तुम्हें?

वार्या : मैं समझती हूं कि कुछ नहीं बने-बनायेगा हमारा। बहुत धंधे हैं उसके पास, उसे फुरसत ही नहीं है मेरे बारे में सोचने की ... वह तो मेरी तरफ़ ध्यान ही नहीं देता। मुझे बख़्श दे, उसे देखकर ही मन भारी हो जाता है ... सभी हमारी शादी की चर्चा करते हैं, सभी हमें बधाइयां देते हैं, लेकिन वास्तव में कुछ भी नहीं, सब कुछ सपने जैसा है ... (बदले हुए लहजे में) तुम्हारा ब्रोच तो मधुमक्खी की शक्ल का है।

आन्या (दुखभरी आवाज़ में) : यह अम्मां ने खरीदा था। (अपने कमरे में जाती है, बच्चों की तरह उल्लासपूर्ण स्वर में) पेरिस में मैं गुब्बारे में उड़ी थी !

वार्या : मेरी लाड़ली बहन आ गयी ! मेरी सुन्दरी आ गयी !

(दुन्याशा कॉफ़ी का बर्तन लेकर आती है और कॉफ़ी तैयार करती है)

(दरवाज़े के पास खड़ी होकर) मेरी गुड़िया, मैं दिन भर घर-गिरस्ती के धंधों में लगी रहती हूं और साथ ही तरह-तरह की कल्पनायें किया करती हूं। किसी धनी से तुम्हारी शादी कर देती तो मैं चैन की बंसी बजाती, खुद संन्यासिनी हो जाती, कीयेब ... फिर मास्को जाती और इसी तरह तीर्थ-यात्रायें करती रहती ... बस, इसी तरह चलती जाती। कैसा अपूर्व सुख मिलता ! ...

आन्या : बाग़ में पक्षी चहचहा रहे हैं। क्या वक्त होगा ?
वार्या : दो तो बज ही चुके होंगे। तुम्हें अब सोना चाहिये ,
मेरी गुड़िया। (आन्या के कमरे में जाकर) अपूर्व सुख !

(याशा कम्बल और सफ़री थैला लिये हुए आता है)

याशा (मंच पार करते हुए विशेष नम्रता से पूछता है) :
यहां से गुज़रने की इजाज़त है ?

दुन्याशा : आपको तो पहचानना भी मुश्किल है , याशा ।
विदेश में रहकर कैसे बदल गये हैं आप ।

याशा : हुम ... और आप कौन हैं ?

दुन्याशा : जब आप यहां से गये थे तो मैं इत्ती-सी थी ...
(फ़र्श से अपनी ऊंचाई दिखाती है) मैं दुन्याशा हूं , फ़्योदोर
कोज़ोदोयेव की बेटी । आपको याद नहीं रही मेरी !

याशा : हुम ... रसभरी हो ! (इधर-उधर नज़र दौड़ाकर
उसे बांहों में भर लेता है । दुन्याशा चीख़ उठती है और उसके
हाथ से एक तश्तरी गिर जाती है । याशा जल्दी से खिसक जाता
है)

वार्या (दरवाज़े से , नाराज़गी के स्वर में) : यहां यह सब
क्या है ?

दुन्याशा (रुआंसी होकर) : मुझसे तश्तरी टूट गयी ...

वार्या : यह तो अच्छा शकुन है ।

आन्या (अपने कमरे से बाहर आते हुए) : अम्मां को भी
बता देना चाहिये कि पेट्या यहां है ...

वार्या : मैंने उसे जगाने की मनाही कर दी है ।

आन्या (सोच में डूबते हुए) : छः साल पहले पिता जी
चल बसे थे , उनकी मौत के एक महीना बाद मेरा छोटा भैया ,
सात साल का प्यारा-सा ग्रीशा नदी में डूब गया । अम्मां यह सब

सहन नहीं कर सकीं, यहां से चली गयीं, यहां से दूर ही दूर होती गयीं ... (सिहरती है) काश, वह जानतीं कि कितनी अच्छी तरह से समझती हूं मैं अम्मां के दिल की हालत को !

(खामोशी)

और पेट्या त्रोफीमोव हमारे ग्रीशा का अध्यापक था। वह अम्मां को ग्रीशा की याद दिला सकता है ...

(फ्रीस आता है, वह कोट और सफ़ेद वास्कुट पहने है)

फ्रीस (चिन्ता का भाव लिये हुए कॉफ़ीदान की तरफ़ जाता है) : मालिकिन यहीं कॉफ़ी पियेंगी ... (सफ़ेद दस्ताने पहनता है) कॉफ़ी तैयार है ? (दुन्याशा से कड़े स्वर में) अरी ! क्रीम कहां है ?

दुन्याशा : हाय राम ... (जल्दी से जाती है)

फ्रीस (अपने आप कुछ बड़बड़ाता है) : पेरिस से लौट आयीं ... कभी तो मालिक भी पेरिस जाते थे ... बग़्घी में ... (हंसता है)

वार्या : फ्रीस, क्या बात है ?

फ्रीस : क्या पूछा आपने ? (खुशी से) मेरी मालिकिन लौट आयीं ! उनके दर्शन हो गये ! अब तो बेशक मर भी जाऊं ... (खुशी से रोता है)

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, गायेव और सिमेओनोव-पीशिचक आते हैं। सिमेओनोव-पीशिचक बढिया कपड़े का रूसी ढंग का कोट और शलवार पहने है। गायेव मंच पर आते हुए हाथों और धड़ से ऐसी मुद्रा बनाता है मानो बिलियर्ड खेल रहा हो)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : कैसे था वह ? याद करने दो न ... पीला गेंद कोने में ! डबल को मध्य में !

गायेव : कोने में फेंका जाये ! बहन , कभी तो हम दोनों इसी कमरे में सोया करते थे और कैसी अजीब बात है कि अब मैं इक्यावन बरस का हो गया हूं ...

लोपाखिन : हां , वक्त तो उड़ता है ।

गायेव : कौन उड़ता है ?

लोपाखिन : मैंने कहा कि वक्त उड़ता है ।

गायेव : यहां ईथर की गन्ध आ रही है । '

आन्या : मैं सोने जा रही हूं । शुभरात्रि , अम्मां । (मां को चूमती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मेरी प्यारी बच्ची । (उसके हाथ चूमती है) तुम खुश हो न कि घर आ गयीं ? मैं तो अभी तक बड़ा अजीब-अजीब-सा अनुभव कर रही हूं ।

आन्या : नमस्ते , मामा जी ।

गायेव (उसका मुंह और हाथों को चूमता है) : भगवान तुम्हारी रक्षा करे । ओह , कितनी मिलती-जुलती हो तुम अपनी अम्मां से ! (बहन से) ल्यूबा , इसकी उम्र में तुम भी बिल्कुल ऐसी ही थीं ।

(आन्या , लोपाखिन और पीश्चिक से हाथ मिलाकर जाती है और दरवाजा बन्द कर लेती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : बिटिया बहुत थक गयी है ।

पीश्चिक : सफ़र भी काफ़ी लम्बा है ।

वार्या (लोपाखिन और पीश्चिक से) : तो महानुभावो ? रात के दो बज चुके हैं , आपको भी जाकर आराम करना चाहिये ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (हंसती है) : वार्या , तुम जैसी थीं ,

वैसी ही रहीं। (उसे अपने पास बुलाकर चूमती है) मैं कॉफ़ी पी लूं और इसके बाद यह महफ़िल ख़त्म हो जायेगी।

(फ़ीर्स उसके पैरों के नीचे छोटी चौकी और उस पर तकिया रख देता है)

शुक्रिया, प्यारे फ़ीर्स। कॉफ़ी की लत पड़ गयी है। इसे दिन और रात को भी पीती रहती हूं। शुक्रिया, प्यारे बाबा। (फ़ीर्स को चूमती है)

वार्या : जाकर देखती हूं कि सारा सामान आ गया है न ... (जाती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : क्या सचमुच यह मैं ही यहां बैठी हूं ? (हंसती है) मेरा मन होता है कि खुशी से उछलूं-कूदूं, हाथों-बांहों को ख़ूब हिला-डुला कर नाचूं। (हाथों से मुंह ढांप लेती है) लेकिन कहीं यह सपना ही न हो ! भगवान साक्षी है, मैं अपनी मातृभूमि को प्यार करती हूं, कैसे सच्चे दिल से चाहती हूं उसे। मैं तो गाड़ी की खिड़की से बाहर भी नहीं देख पायी, लगातार रोती रही। (आंखें गीली हो जाती हैं) लेकिन ख़ैर, कॉफ़ी पीनी चाहिये। शुक्रिया फ़ीर्स, शुक्रिया, मेरे प्यारे बुढ़ऊ। मैं बहुत खुश हूं तुम्हें ज़िन्दा देखकर।

फ़ीर्स : परसों।

गायेब : यह अब ऊंचा सुनने लगा है।

लोपाख़िन : मुझे अभी, चार बजे के बाद स्कार्कोव जाना है। कितने दुख की बात है ! आपको जी भरकर देखना, आपसे बातें करना चाहता था ... आप तो पहले जैसी ही सुन्दर हैं।

पीशिचक (गहरी सांस लेकर) : पहले से भी बढ़-चढ़कर ... पेरिसी ढंग के कपड़ों ने और भी चार चांद लगा दिये ... बस, डूब गयी मेरी लुटिया ...

लोपाखिन : आपके भाई , लेओनीद अन्द्रेयेविच , मेरे बारे में यह कहते रहते हैं कि मैं गंवार-जाहिल हूं , पैसे का पीर हूं , लेकिन मुझे इस सबसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता । कहते रहें । मगर मैं इतना ज़रूर चाहता हूं कि आप पहले की तरह ही मुझ पर भरोसा करें , कि आपकी अद्भुत और प्यारी-प्यारी आंखों में मेरे लिये पहले जैसा ही भाव बना रहे । हे मेरे भगवान ! मेरे पिता आपके पिता और दादा के दास थे । किन्तु आपने , खुद आपने मेरे लिये कभी इतना कुछ किया कि मैं अतीत के अपने सारे दुख-दर्द भूल गया और आपको किसी रिश्तेदार की तरह , रिश्तेदार से भी बढ़कर प्यार करता हूं ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मैं इतनी खुश हूं कि चैन से बैठ नहीं सकती , मेरे लिये बैठना सम्भव नहीं ... (उछलकर खड़ी होती है और बेचैनी से इधर-उधर आती-जाती है) मैं इस खुशी को बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगी ... आप लोग मुझ पर हंस सकते हैं , मैं पागल हूं ... मेरी प्यारी अलमारी ... (अलमारी को चूमती है) मेरी छोटी-सी मेज़ ।

गायेव : तुम्हारे पीछे यहां आया मर गयी ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (बैठकर कॉफ़ी पीती है) : भगवान उसे स्वर्ग में जगह दे । स्वत में मुझे बताया गया था ।

गायेव : और अनासतासी भी मर गया । वह भेंगा पेत्रूश्का मेरे यहां से चला गया और अब शहर में कोतवाल के यहां रहता है । (जेब से मीठी गोलियों की डिबिया निकालता है और एक गोली मुंह में डालकर चूसता है)

पीशिचक : मेरी बिटिया दाशेन्का ने आपको ... नमस्कार कहा है ...

लोपाखिन : मेरा मन चाहता है कि आपसे कोई प्यारी , कोई खुशी की बात कहूं । (घड़ी पर नज़र डालकर) मैं अभी

चला जाऊंगा, बात करने का भी वक्त नहीं है ... मैं दो-चार शब्दों में ही अपनी बात कहे देता हूं। यह तो आपको मालूम ही है कि कर्ज चुकाने के लिये आपकी चेरी की बगिया बाईस अगस्त को बिक जायेगी। लेकिन आप चिन्ता नहीं करें, चैन की नींद सोयें। मुसीबत से बचने का रास्ता है ... मैं अपनी योजना पेश करता हूं। ध्यान दीजिये ! आपकी जागीर शहर से कोई १५ मील दूर है, रेलवे लाइन भी अब उसके पास से गुजरती है। अगर चेरी की बगिया और नदी-किनारे की ज़मीन को टुकड़ों में बांटकर वहां गर्मियों के बंगले बनाने के लिये उन्हें किराये पर दे दिया जाये तो आपको साल में कम से कम पच्चीस हजार रूबल की आमदनी हो जायेगी।

गायेव : माफ़ी चाहता हूं, बड़ी बेतुकी बात है यह।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, आपकी बात पूरी तरह मेरी समझ में नहीं आयी।

लोपाखिन : आप हर बंगलेवाले से एक हेक्टर के लिये कम से कम पच्चीस रूबल सालाना लेंगी। अगर इसी समय इसका विज्ञापन निकलवा दें तो मैं किसी भी चीज़ की शर्त बदकर यह कहने को तैयार हूं कि पतभर आने तक ज़मीन का एक भी टुकड़ा आपके पास नहीं रहेगा, सब किराये पर चढ़ जायेंगे। थोड़े में यह कि बचने की सूरत निकल आयी, आपको बधाई देता हूं। ज़मीन बहुत अच्छी जगह पर है, नदी गहरी है। हां, यहां सफ़ाई करवाना, फ़ालतू चीज़ों को हटाना ज़रूरी है ... मिसाल के तौर पर पुरानी इमारतें, जैसे कि यह मकान जो किसी काम का नहीं रहा, हटा देनी होंगी और चेरी की इस पुरानी बगिया को भी कटवा देना होगा ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : कटवा देना होगा ? क्षमा कीजिये, आप कुछ भी तो नहीं समझते। हमारे इस सारे इलाक़े में अगर कोई

दिलचस्प, यहां तक कि कोई कमाल की चीज है तो वह हमारी चेरी की बगिया ही है।

लोपाखिन : इस बगिया में अगर कमाल की कोई बात है तो सिर्फ़ यही कि यह बहुत बड़ी है। दो साल में एक बार इसकी फ़सल होती है और तब यह समझ में नहीं आता कि उसका क्या किया जाये, कोई खरीदनेवाला नहीं होता।

गायेब : 'विश्व-कोश' में भी इस बगिया का उल्लेख किया गया है।

लोपाखिन (घड़ी पर नज़र डालकर) : अगर हम कोई उपाय नहीं सोचेंगे और किसी नतीजे पर नहीं पहुंचेंगे तो चेरी की बगिया और पूरी जागीर नीलाम हो जायेगी। फ़ैसला कर लीजिये ! क़सम खाकर कहता हूं दूसरा कोई रास्ता नहीं है। नहीं है, नहीं है।

फ़ीर्स : पुराने वक्तों में—कोई चालीस-पचास साल पहले चेरी को सुखाया जाता था, भिगोया जाता था, सिरके में डाला जाता था, उसका मुरब्बा तैयार किया जाता था और ऐसा भी होता था ...

गायेब : चुप रहो फ़ीर्स।

फ़ीर्स : और ऐसा भी होता था कि सुखायी हुई चेरी को घोड़ा-गाड़ियों में भर भरकर मास्को तथा खार्कोव भेजा जाता था। उससे पैसा मिलता था ! तब सुखायी हुई चेरी नर्म, रसीली, मीठी और खुशबूदार होती थी ... लोग इसे सुखाने का तरीका जानते थे ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : अब कहां है यह तरीका ?

फ़ीर्स : लोग भूल गये। किसी को भी याद नहीं।

पीशिचक (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से) : पेरिस का क्या हालचाल है ? कैसा है वह ? वहां आपने मेढक खाये ?

ल्युबोव अन्द्रेयेन्ना : मगरमच्छ खाये।

पीश्चिक : ज़रा गौर कीजिये ...

लोपाखिन : गांव में अब तक ज़मींदार और किसान ही होते थे और अब ये गर्मियों में बंगलोंवाले भी नमूदार हो गये हैं। क़स्बों तक सभी शहर अब बंगलों से घिरे हुए हैं। कहा जा सकता है कि कोई बीस साल बाद इन बंगलेवालों की भरमार हो जायेगी। अभी तो ये लोग अपने छज्जों में बैठकर चाय पीते हैं, लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि अपनी एक हेक्टर ज़मीन में वे खेती-बाड़ी भी करने लगे। तब आपकी चेरी की बगिया की क़िस्मत जाग जायेगी, वह बड़ी शानदार और कमाल की जगह बन जायेगी ...

गायेव (बिगड़ते हुए) : कैसी बेतुकी बात है !

(वार्या और याशा आते हैं)

वार्या : अम्मां, आपके नाम दो तार आये हैं। (चाबी निकालकर अलमारी खोलती है) ये लीजिये।

ल्युबोव अन्द्रेयेन्ना : पेरिस से आये हैं। (पढ़े बिना ही उन्हें फाड़ डालती है) पेरिस से मुझे अब कुछ लेना-देना नहीं ...

गायेव : ल्यूबा, तुम्हें मालूम है कि कितने साल हो गये इस अलमारी को बने ? एक हफ़्ता पहले मैंने इसकी नीचेवाली दराज़ निकाली तो उस पर इसके बनाये जाने की तारीख़ खुदी हुई देखी। पूरे सौ साल हो गये इसे बने हुए। कहो, क्या ख़्याल है ? हम तो इसका शताब्दी-समारोह भी मना सकते हैं। है तो यह बेजान चीज़, फिर भी किताबों की अलमारी ठहरी।

पीश्चिक (हैरान होकर) : सौ साल ... आप ज़रा गौर कीजिये ! ..

गायेव : हां ... यह है एक चीज़ ... (अलमारी पर हाथ

फेरते हुए) प्यारी , बहुत ही आदर के योग्य अलमारी ! तुम्हारे अस्तित्व का अभिनन्दन करता हूं जो भलाई और न्याय के अच्छादशों को समर्पित रहा है। सौ सालों के दौरान उपयोगी और फलप्रद कार्य के लिये तुम्हारा आह्वान कभी धीमा नहीं पड़ा। (आंसू भरकर) तुम हमारे वंश की पीढ़ियों को प्रफुल्लता और उज्ज्वल भविष्य के प्रति आस्था प्रदान करती रहीं और हमें भलाई तथा सामाजिक आत्म-चेतना के आदर्शों की शिक्षा देती रहीं।

(खामोशी)

लोपाखिन : हां ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तुम जैसे थे , वैसे ही रहे , भैया ल्योन्या।

गायेव (कुछ परेशानी महसूस करते हुए) : गेंद को दायें कोने में ! मध्य में टक्कर !

लोपाखिन (घड़ी पर नज़र डालकर) : मेरे जाने का वक्त हो गया।

याशा (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना को दवाई देता है) : शायद इस समय आप दवा की ये गोलियां खायेंगी ...

पीश्चिक : आपको दवाइयां नहीं खानी चाहिये , देवी जी ... इनसे न कोई नुकसान और न फ़ायदा ही होता है ... अतीव आदरणीया ... इधर दीजिये तो। (दवाई की गोलियां लेकर उन्हें हथेली पर पलट लेता है , उन पर फूंक मारता है , मुंह में डालकर क्वास के घूंट के साथ निगल जाता है) देखा !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (घबराकर) : आपका दिमाग़ खराब हो गया लगता है !

पीश्चिक : सारी गोलियां खा गया।

लोपाखिन : बड़े पेटू हो।

(सभी हंसते हैं)

फ्रीस : ईस्टर पर हुजूर आये और खीरों की आधी बालटी खा गये ... (बड़बड़ाता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह क्या कह रहा है ?

वार्या : तीन साल से ऐसे ही बड़बड़ाता रहता है। हमें तो इसकी आदत पड़ गयी है।

याशा : बुढ़ापा जो है।

(बहुत दुबली-पतली, सीधी-सतर शर्लोत्ता इवानोव्ना सफ़ेद फ़ाक पहने और पेट्टी के साथ एक कमानीवाला चश्मा लटकाये हुए मंच पर से गुज़रती है)

लोपाख़िन : शर्लोत्ता इवानोव्ना, माफ़ी चाहता हूँ, अभी तक आपका अभिवादन नहीं कर पाया। (उसका हाथ चूमना चाहता है)

शर्लोत्ता (हाथ पीछे खींचते हुए) : अगर आपको हाथ चूमने हूँ तो इसके बाद आप कोहनी और फिर कन्धा चूमना चाहेंगे ...

लोपाख़िन : आज तो कमबख़्त किस्मत ही साथ नहीं दे रही।

(सब हंसते हैं)

शर्लोत्ता इवानोव्ना, कोई खेल, कोई हाथ की सफ़ाई दिखाइये न।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : शर्लोत्ता, दिखाइये, दिखाइये कोई हाथ की सफ़ाई !

शर्लोत्ता : नहीं, इस वक़्त नहीं। मुझे नींद आ रही है। (जाती है)

लोपाखिनः तीन हफ्ते बाद मिलेंगे। (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना का हाथ चूमता है) तब तक के लिये विदा दीजिये। जाने का वक्त हो गया। (गायेव से) फिर मिलेंगे। (पीदिचक और लोपाखिन एक-दूसरे को चूमते हैं) फिर मिलेंगे। (वार्या, फ्रीर्स और याशा से हाथ मिलाता है) जाने को मन नहीं हो रहा। (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से) अगर बंगलों के बारे में मेरी योजना जंच जाये तो मुझे सूचित कर दीजियेगा। पचास हजार के कर्ज का मैं प्रबन्ध कर दूंगा। बड़ी गम्भीरता से सोच-विचार कीजियेगा।

वार्या (झुल्लाकर) : आखिर अब जाने का नाम भी लीजिये !

लोपाखिन : जा रहा हूं, जा रहा हूं ... (जाता है)

गायेव : नीच कहीं का। वैसे, क्षमा चाहता हूं ... हमारी वार्या तो उससे शादी करनेवाली है, वह वार्या का भावी दूल्हा है।

वार्या : मामा जी, बेकार की बातें नहीं कीजिये।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यों वार्या, मुझे तो बहुत खुशी होगी। भला आदमी है वह।

पीदिचक : सच तो यही है कि आदमी वह ... लायक है ... मेरी दाशा भी कहती है कि ... बहुत-सी बातें कहती है वह तो। (खरटे लेता है और उसी क्षण जाग जाता है) फिर भी, अतीव आदरणीया, आप मुझे ... दो सौ चालीस रूबल कर्ज दे दीजिये ... कल मुझे अपने रेहन पर ब्याज देना होगा ...

वार्या (घबराकर) : नहीं, नहीं हैं !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मेरे पास तो सचमुच कुछ नहीं है।

पीदिचक : कहीं न कहीं से तो मिल ही जायेंगे। (हंसता है) मैं कभी उम्मीद नहीं छोड़ता। पिछली बार मैंने सोचा था कि सब कुछ चौपट हो गया, कोई रास्ता नहीं रहा और ठीक उसी

वक्त मेरी ज़मीन पर से रेल की पटरी बिछायी गयी और ... मुझे इसके लिये पैसा मिल गया। ठीक इसी तरह अब भी कोई न कोई करिश्मा हो जायेगा, आज नहीं तो कल ... हो सकता है कि लाटरी के टिकट में ही मेरी दाशा के नाम दो लाख की रकम निकल आये।

ल्युबोव अन्ट्रेयेव्ना : काँफ़ी पी ली गयी, अब सोया जा सकता है।

फ़ीर्स (गायेब के कपड़ों को ब्रश से साफ़ करते हुए समझाने के अन्दाज़ में) : फिर वह पतलून नहीं पहना जो पहनना चाहिये था। कैसे समझाऊं मैं आपको !

वार्या (धीरे से) : आन्या सो रही है। (खिड़की को धीमे-धीमे खोलती है) सूरज निकल आया है, ठण्ड नहीं रही। अम्मां, देखिये तो — कितने अद्भुत लग रहे हैं पेड़ ! हे भगवान, कैसी महकी हुई हवा है ! मैनायें गा रही हैं।

गायेब (दूसरी खिड़की खोलता है) : पूरी तरह फूलों से सफ़ेद हो गयी है बगिया। तुम भूल तो नहीं गयीं ल्यूबा ? यह लम्बी वीथिका बिल्कुल सीधी, खिंची हुई पेटी की तरह सीधी चली गयी है। यह चांदनी रात में कैसी चमका करती है। तुम्हें याद है न ? भूल तो नहीं गयीं ?

ल्युबोव अन्ट्रेयेव्ना (खिड़की से बगिया को देखती है) : ओह मेरा बचपन, मेरे बचपन का भोलापन ! मैं बच्चों के इसी कमरे में सोया करती थी, यहीं से बगिया में भांकती थी और हर सुबह को खुशी मेरे साथ पलक खोलती थी। तब भी यह बगिया ऐसी ही थी, कुछ भी तो नहीं बदला। (खुशी से हंसती है) बौराये पेड़ों से एकदम, एकदम सफ़ेद ! ओह, मेरी बगिया ! अंधेरी और बुरे मौसमवाली पतभर तथा ठण्डे जाड़े-पाले के बाद तुम पर फिर से जवानी आ गयी है, तुम

खुशी से भरपूर हो, आकाश के फ़रिश्तों की अभी तक तुम पर कृपादृष्टि बनी हुई है... काश, मेरे दिल-दिमाग़ पर रखा हुआ यह भारी बोझ हट सकता। काश, मैं अपने अतीत को भूल सकती !

गायेब : हां, और कैसी अजीब बात है कि क़र्ज़ चुकाने के लिये हमारी इस बगिया को भी बेच दिया जायेगा ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : देखिये, वह हमारी दिवंगता अम्मां बगिया में से चली जा रही हैं... सफ़ेद पोशाक पहने ! (खुशी से हंसती है) अम्मां ही हैं।

गायेब : कहां ?

वार्या : कैसी बात कर रही हैं, अम्मां।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : कोई भी नहीं, मुझे ऐसे भ्रम हुआ था। दायीं ओर, कुंज की तरफ़ जानेवाले मोड़ पर सफ़ेद फूलों से ढका पेड़ ऐसे भुका हुआ है मानो कोई औरत हो ...

(विद्यार्थियों की पुरानी वर्दी पहने और चश्मा लगाये हुए त्रो-फ़ीमोव आता है)

कितनी अद्भुत बगिया है ! ढेरों-ढेर सफ़ेद फूल, नीलाकाश ...

त्रोफ़ीमोव : ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना !

(वह उसकी तरफ़ देखती है)

मैं तो आपको केवल नमस्कार करने आया हूं और इसी क्षण चला जाऊंगा। (बड़े तपाक से उसका हाथ चूमता है) मुझसे कहा गया था कि मैं सुबह तक इन्तज़ार करूं, लेकिन मैं इतना सब्र नहीं कर सका ...

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना भौचक्की-सी उसकी तरफ़ देखती रहती है)

वार्या (रोते हुए) : यह पेट्या त्रोफ़ीमोव है ...

त्रोफ़ीमोव : पेट्या त्रोफ़ीमोव जो कभी आपके ग्रीशा को पढ़ाया करता था ... क्या मैं इतना ज़्यादा बदल गया हूँ ?

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना उसे गले लगाकर धीरे-धीरे रोती है)

गायेव (परेशान होते हुए) : बस , बस करो ल्यूबा ।

वार्या (रोती है) : मैंने तुमसे कहा था न पेट्या कि तुम सुबह तक इन्तज़ार करना ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मेरा ग्रीशा ... मेरा बच्चा ... ग्रीशा ... मेरा बेटा ...

वार्या : अम्मां , इसमें किसी का बस ही क्या है । भगवान की यही इच्छा थी ।

त्रोफ़ीमोव (रोते हुए , करुण स्वर में) : अब और नहीं रोइये , और नहीं रोइये ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (धीरे-धीरे रोती है) : मेरा बेटा मर गया , डूब गया ... किसलिये ? किसलिये , मुझे बताओ , पेट्या ? (धीमे स्वर में) वहां आन्या सो रही है और मैं ऊंचे-ऊंचे बोल रही हूँ ... शोर मचा रही हूँ ... हां , तो पेट्या ? यह तुम्हारी शक्ल-सूरत को क्या हो गया ? तुम बुढ़ा क्यों गये हो ?

त्रोफ़ीमोव : गाड़ी में भी एक औरत ने मुझे फटीचर रईसज़ादा कहा ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तब तुम बिल्कुल छोकरे थे , प्यारे-से लगनेवाले विद्यार्थी , लेकिन अब तुम्हारे बाल विरले हो गये हैं , आंखों पर चश्मा चढ़ गया है । क्या तुम अभी भी विद्यार्थी हो ? (दरवाज़े की तरफ़ जाती है)

त्रोफ़ीमोव : शायद मैं चिरन्तन विद्यार्थी ही रहूंगा।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (भाई और फिर वार्या को चूमती है) :
तो जाइये, जाकर सो जाइये ... तुम भी बूढ़े हो गये लेओनीद।

पीशिचक (उसके पीछे-पीछे जाता है) : तो अब सोना चाहिये ... ओह, यह मेरा जोड़ों का दर्द। मैं तो आपके यहां ही ठहरूंगा ... मेरी बहुत अच्छी ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, कल सुबह आप मुझे ... दो सौ चालीस रूबल दे दीजिये ...

गायेव : यह अपना ही राग अलापता जा रहा है।

पीशिचक : दो सौ चालीस रूबल। मुझे रेहन पर सूद अदा करना है।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : भैया मेरे, नहीं हैं मेरे पास रूबल।

पीशिचक : लौटा दूंगा, प्यारी ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना ... कोई बड़ी रकम थोड़े ही है ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : अच्छी बात है, लेओनीद दे देगा ... लेओनीद, तुम दे दो।

गायेव : हां, मैं दे दूंगा, मुंह धो रखे।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : क्या किया जाये, दे दो ... उसे ज़रूरत है ... लौटा देगा।

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, त्रोफ़ीमोव, पीशिचक और फ़ीर्स जाते हैं।

गायेव, वार्या और याशा मंच पर रह जाते हैं)

गायेव : बहन की पैसा उड़ाने की आदत अभी तक नहीं गयी। (याशा से) तुम ज़रा हट जाओ भले आदमी, तुमसे मुर्गियों की बू आती है।

याशा (व्यंग्यपूर्ण मुस्कान से) : लेओनीद अन्द्रेयेविच, आप जैसे थे वैसे ही रहे।

गायेब : क्या ? (वार्या से) क्या कहा इसने ?

वार्या (याशा से) : तुम्हारी मां गांव से आयी है , कल से नौकरों की कोठरी में बैठी है , तुमसे मिलना चाहती है ...

याशा : बैठी है , तो बैठी रहे !

वार्या : ओह , बेहया कहीं का !

याशा : बड़ी जरूरत है मुझे उसकी । कल भी आ सकती थी ।
(जाता है)

वार्या : अम्मां पहले जैसी ही रहें , जरा भी नहीं बदलीं । अगर उनकी चले तो वह सब कुछ ही लुटा दें ।

गायेब : हां ...

(खामोशी)

जब किसी बीमारी के बहुत-से इलाज बताये जाते हैं तो इसका मतलब यह होता है कि बीमारी का कोई इलाज नहीं । मैं सोचता रहता हूं , अक्ल लड़ाता रहता हूं , मुझे बहुत से , बहुत ज्यादा उपाय सूझते हैं और इसका मतलब यह है कि कोई भी उपाय नहीं है । अच्छा होता कि कहीं से कोई बड़ी विरासत मिल जाती , हमारी आन्या की किसी बहुत ही अमीर आदमी से शादी हो जाती , यारोस्लाव्ल जाकर काउंटेस मौसी के यहां अपनी क्रिस्मत आजमायी जाती । मौसी तो इतनी अमीर है कि कोई हद ही नहीं ।

वार्या (रोती है) : काश , भगवान किसी तरह हमारी मदद करे ।

गायेब : रोओ नहीं । मौसी है तो बहुत अमीर , मगर हमें चाहती नहीं । इसका पहला कारण तो यह है कि बहन ने किसी कुलीन से नहीं , बल्कि वकील से शादी की ...

(दरवाजे के पास आन्या दिखाई देती है)

कुलीन से शादी नहीं की और फिर उसके जीवन का रंग-ढंग भी प्रशंसनीय नहीं रहा। वह अच्छी है, दयालु है, सहृदय है, मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ। लेकिन सचाई को चाहे कितना ही घटाकर क्यों न देखा जाये, यह तो मानना ही पड़ेगा कि वह चरित्रहीन है। उसकी हर छोटी-से छोटी बात में इस बात की अनुभूति होती है।

वार्या (फुसफुसाकर) : आन्या दरवाजे के पास खड़ी है।

गायेब : क्या ?

(छामोशी)

अजीब बात है, मेरी दायाँ आँख में कुछ पड़ गया लगता है ... साफ़ दिखाई नहीं देता। बृहस्पतिवार को जब मैं ज़िला अदालत में था तो ...

(आन्या आती है)

वार्या : तुम सोती क्यों नहीं आन्या ?

आन्या : नींद नहीं आ रही। कोशिश करके देख चुकी।

गायेब : मेरी गुड़िया। (उसके मुँह और हाथों को चूमता है)

मेरी बिटिया ... (आंसू भरकर) तुम मेरी भानजी नहीं, मेरा फ़रिश्ता हो, मेरा सर्वस्व हो। विश्वास करो, मेरी बात का विश्वास करो ...

आन्या : मैं आप पर विश्वास करती हूँ, मामा जी। सभी आपको प्यार करते हैं, आपका आदर करते हैं ... लेकिन प्यारे मामा जी, आपको चुप रहना चाहिये, केवल चुप रहना चाहिये।

अभी-अभी आप मेरी अम्मां, अपनी बहन के बारे में क्या कह रहे थे ? किसलिये आपने ऐसा कहा ?

गायेब : हां, हां ... (**आन्या** के हाथ से अपना मुंह ढंक लेता है) सचमुच, बड़ी बुरी बात है यह ! भगवान ! मुझ पर दया करो भगवान ! आज मैंने किताबों की अलमारी के सामने भाषण भाड़ दिया ... कैसी बेवकूफी थी यह ! भाषण पूरा करने के बाद ही समझा कि बड़ी हिमाकृत थी यह ।

वार्या : सच, मामा जी . आपको तो चुप रहना चाहिये । मुंह ही नहीं खोलिये , बस , क्रिस्ता खत्म ।

आन्या : चुप रहेंगे तो खुद को भी चैन मिलेगा ।

गायेब : नहीं बोलूंगा । (**आन्या** और **वार्या** के हाथ चूमता है) बिल्कुल नहीं बोलूंगा । सिर्फ़ जरूरी काम की एक बात करूंगा । बृहस्पति को मैं ज़िला अदालत में गया था , वहां जान-पहचान के कुछ लोग मिल गये , इधर-उधर की बातें होने लगीं और बातों-बातों में यह पता चला कि हुंडी लिखकर बैंक का सूद चुकाने के लिये कर्ज लिया जा सकता है ।

वार्या : काश , भगवान हमारी मदद करे !

गायेब : मंगल को वहां जाऊंगा , फिर से बातचीत करूंगा । (**वार्या** से) रोना बन्द करो । (**आन्या** से) तुम्हारी अम्मां लोपाखिन से बात करेंगी । वह निश्चय ही उन्हें इन्कार नहीं करेगा ... और तुम सफ़र की थकान उतर जाने के बाद अपनी काउंटेस नानी के पास यारोस्लाव्ल चली जाना । तो हम तीन तरफ़ से इस मामले पर धावा बोलेंगे और समझो कि जीत यक़ीनी तौर पर हमारी होगी । मुझे विश्वास है कि ब्याज हम चुका देंगे ... (मुंह में एक मीठी गोली डालकर चूसता है) अपने सिर की कसम खाकर कहता हूं , तुम जो भी कहो , मैं वही कसम खाने को तैयार हूं कि जागीर नहीं बिकेगी । (**जोश**

से) मैं अपनी सारी खुशियों की कसम खाता हूँ ! यह रहा मेरा हाथ , मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि अगर जागीर नीलाम हो जाये तो तुम मेरे मुँह पर थूक देना , मुझे नीच-कमीना कहना ! अपनी जान की कसम खाता हूँ।

आन्या (शान्त होकर मामा के पास खुश-खुश आती है) : कितने अच्छे हैं आप , मामा जी , कितने समझदार हैं। (बांहों में भर लेती है) अब मेरी चिन्ता दूर हो गयी ! मन शान्त हो गया ! मैं खुश हूँ !

(फ्रीर्स आता है)

फ्रीर्स (झिड़कते हुए) : लेओनीद अन्द्रेयेविच , आपको ईश्वर का कोई डर-भय नहीं है ! कब सोयेंगे ?

गायेव : अभी , अभी। तुम जाओ , फ्रीर्स। तुम चिन्ता नहीं करो , मैं अपने कपड़े खुद ही उतार लूंगा। तो बच्चियो , बाई-बाई ... कल और तफ़सील में बातें करेंगे , लेकिन अब तो तुम जाकर सोओ। (आन्या और वार्या को चूमता है) मैं नौवें दशक * का आदमी हूँ ... इस वक्त के बारे में लोग नाक-भौंह भी सिकोड़ते हैं , फिर भी मैं यह कह सकता हूँ कि अपनी आस्थाओं-विश्वासों के लिये मुझे बहुत काफ़ी कीमत चुकानी पड़ी अपने जीवन में। योही तो मुझे किसान प्यार नहीं करते। किसान को जानना-समझना चाहिये ! यह मालूम होना चाहिये कि वह ...

आन्या : मामा जी , आप फिर शुरू हो गये !

वार्या : आप चुप रहें न मामा जी।

फ्रीर्स (झुंझलाकर) : लेओनीद अन्द्रेयेविच !

गायेव : आ रहा हूँ , आ रहा हूँ ... तुम बिस्तर पर जाओ।

* १९वीं शताब्दी के अंत में रूस में प्रतिक्रिया का समय था। - अनु०

दोनों तरफ़ से बीच की पाकेट में ! क्या बढ़िया निशाना है ...
(जाता है, उसके पीछे-पीछे फ़ीर्स छोटे-छोटे क़दम उठाता चल रहा है)

आन्या : मेरा मन अब शान्त हो गया । यारोस्लाव्ल मैं नहीं जाना चाहती, नानी मुझे अच्छी नहीं लगती, लेकिन मेरा मन अब शान्त है । मामा जी को धन्यवाद । (बैठती है)

वार्या : अब सोना चाहिये । मैं जाती हूं । लेकिन सुनो, जब तुम नहीं थीं तो यहां कुछ गड़बड़ हो गयी थी । जैसा कि तुम जानती हो, नौकरों के पुराने घर में सिर्फ़ पुराने नौकर येफ़ीम, पोल्या, येव्स्तीग्नेई और कार्प ही रहते हैं । उन्होंने कुछ लफ़्गों-बदमाशों को रात बिताने के लिये यहां ठहराना शुरू कर दिया — मैं चुप रही । मगर तभी ऐसी अफ़वाहें सुनने को मिलीं कि मानो मैं कंजूसी करते हुए उन्हें सिर्फ़ मटर ही खाने को देती हूं । सुना तुमने ... और ऐसी अफ़वाहें फैलायीं येव्स्तीग्नेई ने ... “अच्छी बात है, अगर ऐसा ही है तो तुम भी मज़ा चखो, ” मैंने सोचा । सो मैंने येव्स्तीग्नेई को बुलवा भेजा ... (जम्हाई लेती है) वह आया ... मैंने उससे कहा : “यह सब क्या है, येव्स्तीग्नेई ... तुम कैसे उल्लू हो ... ” (आन्या की ओर देखकर) प्यारी आन्या ! ..

(खामोशी)

सो गयी !.. (आन्या की बांह थामकर) आओ, चलें बिस्तर पर । (उसे ले जाती है) मेरी लाड़ली बहन सो गयी ! आओ चलें ...

(जाती है)

(बगिया से दूर कोई चरवाहा मुरली बजाता सुनाई देता है ।

त्रोफ़ीमोव मंच पर से गुज़रता है और वार्या तथा आन्या को देखकर रुक जाता है)

वार्या : शी ... वह सो रही है ... सो रही है ... चलो , मेरी गुड़िया ।

आन्या (कुछ-कुछ नींद में , धीरे-धीरे) : बहुत थक गयी हूं ... घंटियां बजती जा रही हैं ... प्यारे ... मामा जी ... अम्मां और मामा जी ...

वार्या : चलो , मेरी लाड़ली , चलो ... (आन्या के कमरे में जाती है)

त्रोफ़ीमोव (प्यार से) : मेरी रोशनी ! मेरी बहार !

(परदा गिरता है)

दूसरा अंक

(मैदान। पुराना, टेढ़ा-मेढ़ा हो चुका और कभी का भूला-बिसरा गिरजा, जिसके नजदीक कुआं और बड़े-बड़े पत्थर हैं जो स्पष्टतः कभी क़ब्रों के पत्थर रहे होंगे। वहां एक पुरानी बेंच रखी है। गायेब के घर की ओर जानेवाला मार्ग नज़र आता है। एक ओर को कुछ-कुछ काले दिखते चिनारों की झलक मिलती है—वहीं से चेरी की बगिया शुरू होती है। दूरी पर टेलीग्राफ़ के खम्भों की क़तार है और बहुत ही दूर क्षितिज पर एक बड़े शहर की हल्की-सी रूपरेखा है। एकदम साफ़ और अच्छे मौसम में यह शहर दिखाई देता है। कुछ ही देर में सूर्यास्त होनेवाला है। शर्लॉत्ता, याशा और दुन्याशा बेंच पर बैठी हैं। येपिस्त्रोदोव उनके पास खड़ा हुआ गिटार बजा रहा है। सभी विचारमग्न बैठे हैं। शर्लॉत्ता पुरानी, छज्जेदार टोपी पहने है। उसने कंधे से बन्दूक उतार ली है और वह पेट्टी का बकसुआ ठीक कर रही है।)

शर्लॉत्ता (सोचते हुए) : मेरे पास सही पासपोर्ट नहीं है, मुझे मालूम नहीं कि मेरी कितनी उम्र है। इसलिये मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मैं अभी छोकरी ही हूं। जब मैं बच्ची थी तो मेरे मां-बाप मेलों-ठेलों में बहुत अच्छे-अच्छे तमाशे दिखाया करते थे। मैं कलाबाज़ियां और तरह-तरह के दूसरे करतब करती थी। मां-बाप के मरने पर एक जर्मन महिला ने मुझे अपने पास रख लिया और पढ़ाने लगी। बहुत अच्छा हुआ। मैं बड़ी होकर शिक्षिका बन गयी। मैं कहां की रहनेवाली और कौन हूं—मुझे मालूम नहीं... मेरे मां-बाप कौन थे, उन्होंने शादी की थी या नहीं... यह भी नहीं जानती। (जेब से खीरा निकालकर खाती है) कुछ भी तो नहीं मालूम मुझे।

(खामोशी)

बहुत मन होता है किसी से बातें करने को , लेकिन किससे करूं ... मेरा तो कोई अपना नहीं है ।

येपिस्त्रोदोव (गिटार बजाता और गाता है) : “ शोरभरी दुनिया से मुझ को लेना क्या , दोस्त-दुश्मनों की मुझ को क्या फ़िक्र भला ... ” मैडोलीन बजाने में कितना मज़ा है !

दुन्याशा : यह मैडोलीन नहीं , गिटार है । (जेबी दर्पण में चेहरा देखती और पाउडर लगाती है)

येपिस्त्रोदोव : प्रेम-दीवाने के लिये यह मैडोलीन ही है ... (गाता है) “ काश , प्यार की आग लगी हो दोनों के दिल में ... ”

(याशा साथ देने लगता है)

शर्लोत्ता : कितना बुरा गाते हैं ये लोग ... छिः ! गीदड़ों की तरह रोते हैं ।

दुन्याशा (याशा से) : विदेशों में तो सचमुच बहुत अच्छा लगता होगा !

याशा : हां , बेशक । आपकी इस बात से तो सहमत होना ही पड़ेगा । (जम्हाई लेता है , इसके बाद सिगार पीने लगता है)

येपिस्त्रोदोव : यह समझना मुश्किल नहीं । विदेशों में हर चीज़ पूरी तरह निखर चुकी है ।

याशा : ज़ाहिर है ।

येपिस्त्रोदोव : मैं पढ़ा-लिखा आदमी हूं , तरह-तरह की बढ़िया किताबें पढ़ता रहता हूं , मगर किसी प्रकार भी यह नहीं समझ पाता कि मेरे लिये कौन-सा सही रास्ता है , कि मैं क्या चाहता हूं — ज़िन्दा रहूं या अपने को गोली मार लूं । फिर भी मैं पिस्तौल

हर वक्त अपने साथ रखता हूं। यह रही ... (पिस्तौल दिखाता है)

शर्लोत्ता : खा लिया खीरा। अब चलती हूं। (बन्दूक कंधे पर लटका लेती है) येपिस्त्रोदोव , तुम बहुत अक्लमन्द और बहुत खतरनाक आदमी हो। औरतों को तुम पर लट्टू होना चाहिये। बर्ररर ! (जाती है) ये सभी अक्लमन्द ऐसे बुद्ध हैं कि किसी से बात ही नहीं की जा सकती ... हमेशा अकेली , अकेली , मेरा कोई नहीं और ... और मैं कौन हूं , किसलिये हूं , मालूम नहीं ... (धीरे-धीरे जाती है)

येपिस्त्रोदोव : किसी दूसरी चीज़ की चर्चा किये बिना , मुझे अपने बारे में यह कहना होगा कि किस्मत मुझ पर ऐसे ही जुल्म ढाती है जैसे तूफान छोटे-से जहाज़ पर। अगर मान लिया जाये कि मैं ग़लत कहता हूं तो किसलिये आज सुबह जब मैं सोकर उठा तो मेरी छाती पर बहुत भयानक मकड़ा बैठा था ... इतना बड़ा। (दोनों हाथों से आकार दिखाता है) क्वास पीनी चाही , तो उसमें भी बड़ी घिनौनी चीज़ नज़र आयी यानी तिलचटा।

(खामोशी)

आपने बकुल को पढ़ा है ?

(खामोशी)

अब्दोत्या फ़्योदोरोव्ना , मैं कुछ बात करने के लिये आपको थोड़ी तकलीफ़ देना चाहता हूं।

दुन्याशा : कहिये।

येपिस्त्रोदोव : अगर एकान्त में बात हो जाये तो ज्यादा अच्छा रहे ... (गहरी सांस लेता है)

दुन्याशा (ज़रा घबराकर) : ठीक है ... लेकिन पहले जाकर मेरा लबादा ले आइये ... वह अलमारी के पास है ... यहां थोड़ी नमी है ...

येपिस्त्रोदोव : अच्छी बात है ... अभी ला देता हूं ... अब मैं जानता हूं कि मुझे अपनी पिस्तौल का क्या करना चाहिये ... (गिटार लेकर उसे बजाता हुआ जाता है) .

याशा : ओह , यह श्रीमान नित नई मुसीबत ! किसी से कहना नहीं , यह मूर्ख आदमी है। (जम्हाई लेता है)

दुन्याशा : भगवान न करे , कहीं अपने को 'गोली-वोली मार ले ।

(खामोशी)

मेरे तो बहुत जल्दी हाथ-पांव फूल जाते हैं , हर चीज़ से मुझे घबराहट होने लगती है। मैं बच्ची ही थी कि यहां मालिकों के पास आ गयी थी। मामूली लोगों की ज़िन्दगी को तो भूल ही गयी हूं। हाथ भी रईसज़ादी की तरह गोरे-गोरे हैं। ऐसी कोमल , ऐसी नाजुक , ऐसी नर्मदिल हो गयी हूं कि हर चीज़ से डरती हूं ... जी कांपता रहता है। याशा , अगर तुम मुझे धोखा दे दोगे तो मैं नहीं जानती कि मेरे दिल का क्या हाल होगा।

याशा (उसे चूमता है) : मेरी रसभरी ! निश्चय ही हर लड़की को यह याद रखना चाहिये कि वह लड़की है। बुरे आचार-व्यवहारवाली लड़की को तो मैं बर्दाश्त ही नहीं कर सकता।

दुन्याशा : मैं तो पागल हो गयी हूं तुम्हारे प्यार में। तुम पढ़े-लिखे हो , सभी बातों पर सोच-विचार कर सकते हो।

(खामोशी)

याशा (जम्हाई लेता है) : सो तो है ... शायद बात यों है कि

अगर लड़की किसी को प्यार करती है तो इसका मतलब यह हुआ कि उसका चाल-चलन अच्छा नहीं।

(खामोशी)

खुली हवा में सिगार पीने में बड़ा मज़ा है ... (कान लगाकर सुनता है) इधर आ रहे हैं ... हमारे साहब लोग हैं ...

(दुन्याशा आवेगपूर्वक उसका आलिंगन करती है)

अब घर जाओ। ऐसे जाहिर करना कि तुम नदी पर नहाने गयी थीं। इस रास्ते से चली जाओ वरना हमारे साहब लोग मिल जायेंगे और मेरे बारे में यह सोचेंगे कि मैंने तुम्हें प्रेम-मिलन 'के लिये यहां बुलाया था। मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं।

दुन्याशा (धीरे से खांसती है) : सिगार से मेरा सिर दुखने लगा है ... (जाती है)

(गिरजे के पास याशा बैठा रह जाता है। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, गायेव और लोपाखिन आते हैं)

लोपाखिन : पक्का फ़ैसला कर लेना चाहिये — वक्त इन्तज़ार नहीं करता। मामला बड़ा सीधा-सादा है। आप अपनी ज़मीन पर बंगले बनाने को राज़ी हैं या नहीं ? हां या ना — बस, एक शब्द में जवाब चाहिये ! केवल एक शब्द !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यहां ऐसे घटिया सिगार कौन पी रहा है ... (बैठती है)

गायेव : रेलवे लाइन बिछ गयी तो कितना आराम हो गया। (बैठता है) शहर जाकर खाना खा लिया ... पीला गेंद बीच की पाकेट में ! मैं तो घर जाकर बिलियर्ड की

एक बाज़ी खेलना चाहता हूं।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : ऐसी क्या जल्दी है।

लोपाखिन : बस , एक शब्द कह दीजिये ! (मिन्नत करते हुए)
मुझे जवाब दीजिये न !

गायेव (जम्हाई लेते हुए) : क्या ?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (अपने पर्स को देखती है) : कल इसमें बहुत पैसे थे , मगर आज बिल्कुल कम रह गये। मेरी बेचारी वार्या किफ़ायत करने को सभी के लिये दूध का सूप बनवाती है , बूढ़ों को सिर्फ़ मटर खिलाये जाते हैं और मैं लापरवाही से पैसा उड़ाती हूं ... (पर्स गिर जाता है , पैसे बिखर जाते हैं) लो , यह भी गिर गये ... (खीझती है)

याशा : हुकम हो , तो मैं अभी उठाये देता हूं। (सिक्के समेटने लगता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : हां , मेहरबानी करके उठा दो , याशा। मैं वहां खाना खाने के लिये गयी ही क्यों ... आर्कैस्ट्रा और बेहूदा-सा रेस्तरां , मेज़पोशों से साबुन की बू आ रही थी ... इतनी ज़्यादा शराब किसलिये पीते हो , ल्योन्या ? इतना ज़्यादा खाते क्यों हो ? इतना ज़्यादा बोलते क्यों हो ? आज रेस्तरां में तुम बहुत बोलते रहे और बातें भी कीं बेतुकी। सातवें दशक और ह्लासोन्मुखों के बारे में। सो भी किससे ? बैरे से ह्लासोन्मुखों के बारे में !

लोपाखिन : हां।

गायेव (हाथ झटकता है) : लगता है कि मेरा तो कुत्ते की दुमवाला ही हाल रहेगा ... (झुल्लाते हुए याशा से) जब देखो तुम तभी आंखों के सामने टापते रहते हो ...

याशा (हंसता है) : आपकी आवाज़ सुनकर मुझे हंसी आ ही जाती है।

गायेव (बहन से) : या तो यह , या मैं ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : जाओ याशा , जाओ यहां से ...

याशा (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना को पर्स देता है) : अभी जाता हूं ।
(मुश्किल से हंसी रोकता है) अभी ... (जाता है)

लोपाखिन : धन्ना सेठ देरीगानोव आपकी जागीर खरीदनेवाला है । सुना है कि नीलाम के वक्त खुद आयेगा ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : आपको कहां से मालूम हुआ ?

लोपाखिन : शहर में चर्चा है ...

गायेव : यारोस्लाव्वा वाली मौसी ने पैसा भेजने का वादा तो किया है , लेकिन कब और कितना , यह मालूम नहीं ...

लोपाखिन : कितना भेज देंगी वह ? एक लाख ? दो लाख ?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यही ... कोई दस , पन्द्रह हजार और इसके लिये भी शुक्रिया ।

लोपाखिन : मैं माफ़ी चाहता हूं , लेकिन यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आप जैसे लापरवाह , अव्यावहारिक और अजीब लोगों से मेरा ज़िन्दगी में पहले कभी वास्ता नहीं पड़ा । मैं आपसे रूसी भाषा में साफ़-साफ़ कह रहा हूं कि आपकी जागीर बिकनेवाली है और आपके कान पर जूं तक नहीं रेंगती ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तो हमें क्या करना चाहिये ? हमें बताइये न कि क्या करें ?

लोपाखिन : मैं हर दिन आपको बताता हूं । हर दिन एक ही बात दोहराता हूं । चेरी की बगिया और ज़मीन को बंगलों के लिये किराये पर चढ़ाना ज़रूरी है । यह काम अभी , जल्दी से जल्दी करना चाहिये — नीलाम सिर पर आ रहा है ! इस बात को समझिये । अगर आप लोग बंगलों के बारे में एक बार फ़ैसला कर लेते हैं तो जितना भी चाहेंगे , पैसा मिल जायेगा और आप मुसीबत से बच जायेंगे ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : बंगले और उन बंगलों में रहनेवाले —

यह सब बहुत घटिया बातें हैं, मैं क्षमा चाहती हूं।

गायेब : मैं तुम्हारे साथ बिल्कुल सहमत हूं।

लोपाखिन : मैं या तो धाड़ मारकर रोने लगूंगा या चिल्लाऊंगा या बेहोश हो जाऊंगा। अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता ! आपने मुझे पागल कर डाला है ! (गायेब से) आप मर्द नहीं, औरत हैं !

गायेब : क्या ?

लोपाखिन : औरत ! (जाना चाहता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (घबराकर) : नहीं, जाइये नहीं, रुके रहिये। आपकी मिन्नत करती हूं। शायद हम कोई रास्ता सोच ही लें !

लोपाखिन : सोचने को रखा ही क्या है !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : जाइये नहीं, आपकी मिन्नत करती हूं। आपकी उपस्थिति से मन लगा रहता है ...

(छामोशी)

मुझे हर समय ऐसा अनुभव होता रहता है मानो कुछ होने-वाला है, मानो हमारे ऊपर मकान गिरनेवाला है।

गायेब (गहरी सोच में) : एक गेंद कोने में ... दूसरा गेंद बीच की पाकेट में ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : बड़े पाप किये हैं हमने ...

लोपाखिन : कौन-से पाप हैं आपके ...

गायेब (मीठी गोली मुंह में डालता है) : लोग कहते हैं कि मैंने मीठी गोलियों में ही अपनी सारी दौलत लुटा दी ... (हंसता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : ओह, मेरे पाप ... मैंने सिरफिरी की तरह हमेशा पैसे को उड़ाया है और शादी भी की तो ऐसे आदमी से जो हमेशा सिर पर कर्ज चढ़ाता रहता था। ज़बर्दस्त पियक्कड़

था वह, शेम्पेन ने ही उसकी जान ले ली। मेरी बदकिस्मती यह कि उसके बाद मुझे एक और से प्यार हो गया, उसके साथ ज़िन्दगी की गाड़ी चलने लगी कि उसी समय मुझे पहला दण्ड मिला, पहली गाज गिरी। यहां, इसी नदी में मेरा बेटा डूब गया। मैं विदेश चली गयी, इस जगह से पूरी तरह नाता तोड़कर चली गयी ताकि फिर कभी यहां न लौटूं, इस नदी को कभी न देखूं... मैं अपनी सुध-बुध खोकर आंखें मूंदे हुए यहां से दूर भागती जा रही थी और वह भी मेरा पीछा कर रहा था निर्दयता से, भोंडे ढंग से। चूंकि वह वहां बीमार पड़ गया, इसलिये मैंने मेंटोन के नज़दीक एक बंगला खरीदा और तीन साल तक मुझे न दिन और न रात को चैन मिला। रोगी ने मुझे बुरी तरह सता मारा, मेरी आत्मा का सारा रस निचुड़ गया। पिछले साल कर्ज चुकाने के लिये बंगला बेचकर मैं पेरिस चली गयी। वह वहां भी मेरे पीछे लगा रहा, मुझे लूट-लाटकर छोड़ दिया, किसी दूसरी औरत के साथ मज़े करने लगा और तब मैंने ज़हर खाकर आत्म-हत्या करने की कोशिश की... बड़ी बेवकूफी, बड़ी शर्म की बात थी यह... अचानक मेरे दिल में रूस, अपनी मातृभूमि, अपनी बिटिया के लिये हुड़क उठने लगी... (आंसू पोंछती है) हे भगवान, हे ईश्वर, मुझ पर दया करो, मेरे पाप क्षमा कर दो! मुझे और दण्ड नहीं देना! (जेब से तार निकालती है) यह तार आज पेरिस से आया है... वह मुझसे माफ़ी मांग रहा है, मिन्नत-समाजत कर रहा है कि मैं लौट आऊं... (तार फाड़कर फेंक देती है) कहीं से मानो संगीत सुनाई दे रहा है। (कान लगाकर सुनती है)

गायब : यह तो यहूदियों का मशहूर आर्केस्ट्रा बज रहा है। तुम्हें याद है न चार वायलिनों, बांसुरी और डबलबासवाला आर्केस्ट्रा।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : अभी तक कायम है यह आर्केस्ट्रा ? किसी शाम को इसे अपने यहां बुलवाना चाहिये। तब खूब रंग जमेगा।

लोपाखिन (ध्यान से सुनता है) : मुझे तो कुछ सुनाई नहीं दे रहा ... (धीरे-धीरे गाता है) “ दो जर्मन को पैसा , वह रूसी को भी कर दे , बिल्कुल फ्रांसीसी के जैसा । ” (हंसता है) क्या कमाल का खेल देखा मैंने कल थियेटर में , हंसते-हंसते लोट-पोट हो गया।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : शायद हंसने की कोई बात ही नहीं थी। आपको खेल-नाटक नहीं , बल्कि खुद अपने को ही अक्सर देखना चाहिये। कैसी अटपटी ज़िन्दगी बिताते हैं आप सब लोग , कितना फ़ालतू बोलते हैं।

लोपाखिन : यह सच है। यह तो मानना ही होगा कि हमारी ज़िन्दगी बड़ी बेहूदा है ...

(खामोशी)

मेरा बापू देहाती , बिल्कुल उल्लू था , कुछ भी नहीं जानता-समझता था , मुझे लिखाया-पढ़ाया नहीं , बस , नशे में धुत्त होकर डंडे से मेरी चमड़ी उधेड़ता रहता था। मैं भी अपने बापू की तरह ही उल्लू और जाहिल हूं। खाक भी नहीं सीखा-सिखाया , लिखावट मेरी ऐसी भद्दी है , ऐसे लिखता हूं कि लोगों के सामने सूअर जैसा लगता हूं , शर्म से आंखें झुक जाती हैं।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : आपको शादी कर लेनी चाहिये , मेरे मित्र।

लोपाखिन : हां ... यह सही है।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : हमारी वार्या से। वह अच्छी लड़की है।

लोपाखिन : हां।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : वह सीधे-सादे लोगों में से है, दिन भर खूब काम करती है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि आपको चाहती है। आपको भी वह एक जमाने से पसन्द है।

लोपाखिन : यह तो ठीक है। मुझे कोई आपत्ति नहीं... वह अच्छी लड़की है।

(छामोशी)

गायेव : मुझे बैंक में छः हजार रूबल वार्षिक की नौकरी मिल रही है... सुना तुमने ?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तुम और बैंक की नौकरी ! आराम से बैठे रहो घर में ...

(ओवरकोट लिये हुए फ्रीर्स आता है)

फ्रीर्स (गायेव से) : हुजूर, ओवरकोट पहन लीजिये, नमी है।

गायेव (ओवरकोट पहनता है) : हर वक्त सिर पर सवार रहते हो, भैया।

फ्रीर्स : यह भी कोई बात है, हुजूर... सुबह कुछ कहे बिना ही चले गये। (उसे ध्यान से देखता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : कितने बुढ़ा गये हो तुम, फ्रीर्स !

फ्रीर्स : क्या कहा मालकिन ?

लोपाखिन : यह कहा गया है कि तुम बहुत बुढ़ा गये हो।

फ्रीर्स : कब से जी रहा हूं। जब मेरा ब्याह होनेवाला था तो आपके पापा का जन्म भी नहीं हुआ था... (हंसता है) जब भूदासों को मुक्ति मिली तो मैं मालिक का बड़ा अर्दली बन चुका था। मैंने मुक्त होने से इन्कार कर दिया, मालिकों के पास ही बना रहा...

(खामोशी)

मुझे याद है कि सब बहुत खुश हुए थे, मगर किसलिये, वे खुद नहीं जानते थे।

लोपाखिनः वह ज़माना अच्छा था। कम से कम कोड़ों से पिटाई तो की जाती थी।

फ़ीर्स (कुछ न सुनकर) : इससे अच्छा और क्या हो सकता था। किसान अपने मालिकों की चिन्ता करते थे, मालिक किसानों की। किन्तु अब तो सब कुछ उलटा-सीधा हो गया है, कोई सिर-पैर ही समझ में नहीं आता।

गायेवः फ़ीर्स, चुप हो जाओ। कल मुझे शहर जाना है। वहां एक जनरल से मेरा परिचय करवाने का वादा किया गया है जो हंडी पर कर्ज़ दे सकता है।

लोपाखिनः कुछ बात नहीं बनेगी इससे। विश्वास कीजिये आप तो उससे अपना सूद तक नहीं चुका पायेंगे।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्नाः यह तो यों ही बेपर की उड़ा रहा है। कोई जनरल-वनरल नहीं है।

(त्रोफ़ीमोव, आन्या और वार्या का प्रवेश है)

गायेवः लो हमारी बच्चियां आ रही हैं।

आन्याः अम्मां यहां बैठी है।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (प्यार से) : आओ, आओ... मेरी बेटियो... (आन्या और वार्या का आलिंगन करती है) काश, तुम दोनों यह जानतीं कि कितना प्यार करती हूं मैं तुम्हें। मेरे पास बैठो, इस तरह।

(सभी बैठ जाते हैं)

लोपाखिन : हमारे यह चिरन्तन विद्यार्थी हमेशा सुन्दरियों की संगत में रहते हैं।

त्रोफ़ीमोव : आपको इससे मतलब ?

लोपाखिन : जल्द ही जनाब पचास के हो जायेंगे, लेकिन अभी तक विद्यार्थी ही हैं।

त्रोफ़ीमोव : अपने इन बेहूदा मज़ाकों को अपने पास ही रखिये।

लोपाखिन : आप भी अजीब आदमी हैं, किसलिये बिगड़ते हैं ?

त्रोफ़ीमोव : आप मेरे पीछे नहीं पड़ें।

लोपाखिन (हंसता है) : अच्छा, आप मुझे यह पूछने की इजाज़त दीजिये कि मेरे बारे में आपका क्या ख्याल है ?

त्रोफ़ीमोव : येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, आपके बारे में मेरा ख्याल यह है कि आप अमीर आदमी हैं, जल्द ही लाखों में खेलेंगे। किन्तु जिस तरह पदार्थ के रूप-परिवर्तन के लिये एक ऐसे दरिन्दे की ज़रूरत होती है जो सामने आनेवाली हर चीज़ को हड़प जाये, ठीक उसी तरह आपकी भी ज़रूरत है।

(सभी हंसते हैं)

वार्या : पेट्या, आप ग्रहों के बारे में बतायें तो ज़्यादा अच्छा रहे।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : नहीं, आइये हम कलवाली बातचीत जारी रखें।

त्रोफ़ीमोव : किस बारे में ?

गायेव : गर्वीले व्यक्ति के बारे में।

त्रोफ़ीमोव : कल हमने बहुत देर तक बातचीत की, लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सके। आपके मतानुसार गर्वीले व्यक्ति में रहस्य का कुछ पुट होता है। सम्भव है कि अपने ढंग से

आप सही भी हों, किन्तु अगर हम सीधे-सादे ढंग से, ज्यादा चतुराई के फेर में पड़े बिना इस पर विचार करें तो गर्व का महत्त्व ही क्या रह जाता है, उसमें तुक ही क्या है, जब शारीरिक दृष्टि से आदमी ढीले-ढाले अंजर-पंजर का है, जब कुल मिलाकर वह गंवार-फूहड़, मूर्ख और बहुत ही दुखी है? उसे अपनी शान नहीं दिखानी चाहिये। सिर्फ काम करना चाहिये।

गायेब : अन्त तो हर हालत में मृत्यु ही है।

त्रोफ़ीमोव : कौन कह सकता है? और अन्त मृत्यु ही है, इसका भी क्या मतलब है? सम्भव है कि आदमी की एक सौ ज्ञानेन्द्रियां हों और मरने पर केवल वही पांच अपनी चेतना खोती हों जिनसे हम परिचित हैं। शेष पचानवे में चेतना बनी रहती हो।

ल्युबोव अन्नेयेव्ना : कितने अक्लमन्द हो तुम, पेत्या !..

लोपाख़िन (व्यंग्यपूर्वक) : खतरनाक होने की हद तक !

त्रोफ़ीमोव : मानवजाति अपनी शक्तियों को निखारती-संवारती हुई आगे बढ़ती जा रही है। आज जो कुछ उसकी पहुंच के बाहर है वह कभी तो उसके पास आ जायेगा, स्पष्ट हो जायेगा। इसके लिये सिर्फ काम करना, अपने पूरे कस-बल से उन लोगों की मदद करनी चाहिये जो सचाई की खोज में लगे हुए हैं। अभी तो हमारे यहां, रूस में बहुत ही कम लोग काम करते हैं। मैं जिन बुद्धिजीवियों से परिचित हूं, उनका अधिकांश न तो कुछ खोजता है, न कुछ करता-धरता है और फ़िलहाल मेहनत करने में असमर्थ है। कहते हैं अपने को बुद्धिजीवी, लेकिन नौकरों के साथ बदतमीजी से पेश आते हैं, किसानों के साथ जानवरों का सा बर्ताव करते हैं, मन लगाकर पढ़ते नहीं, गम्भीरता से किसी चीज़ का अध्ययन नहीं करते, एकदम निठल्ले रहते हैं,

विज्ञानों की सिर्फ चर्चा ही किया करते हैं, कला को बहुत कम समझते हैं। सभी बड़े धीर-गम्भीर बने रहते हैं, उनके चेहरों पर संजीदगी छाई रहती है, सभी बड़ी महत्वपूर्ण समस्याओं को उठाते हैं, फलसफा भाड़ते हैं, जबकि उन सभी की आंखों के सामने मजदूरों को ढंग की रोटी भी नसीब नहीं होती, तकियों के बिना एक ही कमरे में तीस-तीस, चालीस-चालीस लोग सोते हैं, हर जगह खटमल, बदबू, सीलन और अनैतिकता का बोल बाला है ... शायद हमारे यहां सभी अच्छी-अच्छी बातें सिर्फ अपनी और दूसरों की आंखों में धूल भोंकने के लिये ही की जाती हैं। मुझे बताइये हमारे यहां वे शिशु-सदन कहां हैं जिनकी इतनी चर्चा की जाती है, वाचनालय कहां हैं? केवल उपन्यासों में उनके बारे में लिखा जाता है, किन्तु वास्तव में उनका अस्तित्व ही नहीं है। सिर्फ है तो गन्दगी, नीचता, एशियाई रंग-ढंग ... मैं बहुत संजीदा चेहरों से डरता हूं और उन्हें नापसन्द करता हूं, गम्भीर बातों से घबराता हूं। यही ज्यादा अच्छा होगा कि चुप रहें!

लोपाखिन: देखिये, मैं हर दिन सुबह के चार बजने के बाद उठता हूं, तड़के से शाम तक काम करता हूं, मेरे पास हमेशा अपना और लोगों का पैसा भी रहता है। मैं इस चीज की तरफ ध्यान दिया करता हूं कि हमारे इर्द-गिर्द कैसे लोग हैं। कोई काम शुरू करते ही हम यह समझ जाते हैं कि ईमानदार और सच्चे लोगों की कितनी कमी है। कभी-कभी जब मुझे नींद नहीं आती तो मैं सोचा करता हूं: “हे भगवान, तुमने हमें इतने बड़े-बड़े जंगल, असीम विस्तारोंवाले मैदान, दूर-दूर तक फैले क्षितिज दिये हैं और यहां रहते हुए हमें खुद असली देव-दानवों जैसा होना चाहिये ...”

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: आप देव-दानव बनना चाहते हैं ... किस्से-

कहानियों में ही वे अच्छे हैं वरना यों तो दहशत पैदा करते हैं।

(नेपथ्य में येपिखोदोव गिटार बजाते हुए गुज़रता है)

(सोचते हुए) येपिखोदोव जा रहा है ...

आन्या (सोचते हुए) : येपिखोदोव जा रहा है ...

गायेव : सूरज डूब गया , महानुभावो।

त्रोफ़ीमोव : हां।

गायेव (धीमे , किन्तु मानो भाषण देते हुए) : हे दिव्य प्रकृति , तू शाश्वत ज्योति से आलोकित है , बहुत सुन्दर और उदासीन है। तू , जिसे हम मां कहते हैं , जीवन और मृत्यु के दो छोरों को मिलाती है , सृष्टि और संहार करती है ...

वार्या (मित्तत करते हुए) : मामा जी !

आन्या : मामा जी , आप फिर बोलने लगे !

त्रोफ़ीमोव : यही बेहतर होगा कि आप पीले गेंद को बीच की पाकेट में डालें !

गायेव : मैं अब नहीं बोलूंगा , नहीं बोलूंगा।

(सभी अपने-अपने विचारों में खोये हुए बैठे हैं। खामोशी। केवल फ़ीर्स का धीरे-धीरे बड़बड़ाना ही सुनाई देता है। अचानक दूरी पर मानो आकाश में जोर की आवाज़ होती है। ऐसे लगता है कि झटके से कोई तार टूट गया हो। दर्दिली-सी यह आवाज़ धीरे-धीरे लुप्त हो जाती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह कैसी आवाज़ थी ?

लोपाख़िन : मालूम नहीं। शायद कहीं बहुत दूर किसी खान में खनिज ले जानेवाला बड़ा डोल टूटकर गिर गया है। किन्तु बहुत ही दूर।

गायेब : शायद बगुले जैसे किसी पक्षी की ही आवाज़ हो।

त्रोफ़ीमोव : या बड़े उल्लू की ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (सिहर उठती है) : न जाने क्यों, बुरा-बुरा-सा लग रहा है।

(खामोशी)

फ़ीर्स : बड़े दुर्भाग्य से पहले भी ऐसा हुआ था — उल्लू चीखता रहा था और समोवार लगातार सूं-सूं करता रहा था।

गायेब : किस दुर्भाग्य के पहले ?

फ़ीर्स : भूदासों की मुक्ति के पहले।

(खामोशी)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : आइये, अब हम लोग घर चलें, अन्धेरा होने लगा है। (आन्या से) तुम्हारी आंखों में आंसू ... यह क्या बात है, बिटिया ? (उसे बांहों में भर लेती है)

आन्या : ऐसे ही अम्मां। कोई बात नहीं।

त्रोफ़ीमोव : कोई आ रहा है।

(फटी हुई सफ़ेद छज्जेदार टोपी और ओवरकोट पहने एक राहगीर दिखाई देता है। वह कुछ-कुछ नशे में है)

राहगीर : यह बताने की कृपा करें कि यहां से मैं सीधा स्टेशन पर जा सकता हूं या नहीं ?

गायेब : जा सकते हैं। इस रास्ते से जाइये।

राहगीर : आपका बहुत ही आभारी हूं। (खांसकर) मौसम बहुत बढ़िया है ... (गीत की पंक्ति बोलता है) मेरे भाई,

पीड़ित भाई ... चल बोल्गा नदी पर जो कराहे ... (वार्या से)
मेम साहब , भूखे रूसी को तीसेक कोपेक देने की मेहरबानी
करें ...

(वार्या डरकर चीख उठती है)

लोपाखिन (झुल्लाते हुए) : शिष्ट व्यवहार करना चाहिये ।

ल्युबोव अन्त्रेयेव्ना (स्तम्भित होकर) : लीजिये ... यह ली-
जिये ... (पर्स में सिक्के ढूँढ़ती है) छोटे सिक्के नहीं हैं ... खैर ,
कोई बात नहीं , यह लीजिये रूबल ...

राहगीर : आपका बहुत ही आभारी हूँ । (जाता है)

(सब हंसते हैं)

वार्या (भयभीत) : मैं जाती हूँ ... जाती हूँ ... ओह , अम्मां ,
घर में नौकरो-चाकरो के खाने के लिये कुछ नहीं है और आपने
उसे रूबल दे दिया ।

ल्युबोव अन्त्रेयेव्ना : मुझ बुद्ध का तुम क्या करोगी ! मेरे
पास जो कुछ है , मैं घर चलकर वह सब तुम्हें दे दूंगी । येमोलाई
अलेक्सेयेविच , मुझे कुछ कर्ज और दे दीजिये ! ..

लोपाखिन : अच्छी बात है ।

ल्युबोव अन्त्रेयेव्ना : तो आइये , घर चलें , वक्त हो गया ।
वार्या , हमने तो यहां तुम्हारी शादी का मामला पूरी तरह तय
कर लिया है । बधाई देती हूँ ।

वार्या (आंसू भरकर) : यह हंसी-मजाक की बात नहीं
है , अम्मां ।

लोपाखिन : ओफ़ेलिया , जाओ किसी मठ में * ...

* शेक्सपीयर के ' हेमलेट ' नाटक से । - अनु०

गायेब : मेरे तो हाथ कांपते हैं ... एक अरसे से बिलियर्ड नहीं खेला ।

लोपाखिन : ओफ़ेलिया , ओ परी , अपनी प्रार्थनाओं में मेरे पापों को भी याद कर लेना !

ल्युबोव अन्त्रेयेव्ना : आइये , अब चलें । खाने का वक्त होने को है ।

वार्या : बुरी तरह डरा दिया उसने मुझे । दिल अभी तक धक-धक कर रहा है ।

लोपाखिन : महानुभावो , आपको याद दिलाता हूं कि बाईस अगस्त को चेरी की बगिया बिक जायेगी । इसके बारे में सोचिये ! .. सोचिये ! ..

(**त्रोफ़ीमोव और आन्या के सिवा सब जाते हैं**)

आन्या (हंसते हुए) : भला हो राहगीर का । उसने वार्या को डरा दिया । अब हम दोनों ही हैं ।

त्रोफ़ीमोव : वार्या को यह धुकधुकी लगी रहती है कि कहीं हम एक-दूसरे को प्यार न करने लगें । इसीलिये हर वक्त हमारी पहरेदारी करती रहती है । अपने छोटे-से दिमाग से वह यह नहीं समझ पाती कि हम प्यार-मुहब्बत से ऊपर हैं । हमारे जीवन का लक्ष्य और अर्थ उस सारी तुच्छता और नीचता से बचना है जो हमारे स्वतन्त्र और सुखी होने में बाधा बनती हैं । बड़े चलो ! हम अदम्य रूप से उस , दूर क्षितिज पर जग-मगाते तारे की ओर बढ़े जा रहे हैं ! बड़े चलो ! पीछे नहीं रहो , साथियो !

आन्या (हाथ पर हाथ मारकर) : कितना बढ़िया बोलते हैं आप !

(खामोशी)

आज यहां बहुत अच्छा लग रहा है !

त्रोफीमोव : हां , मौसम बहुत प्यारा है ।

आन्या : आपने यह मेरे साथ क्या कर दिया है , पेट्या । चेरी की बगिया को अब मैं पहले की तरह नहीं चाहती हूं । मैं इसे इतना अधिक प्यार करती थी कि मुझे लगता था मानो इस धरती पर इससे बढ़कर कोई दूसरी जगह ही नहीं ।

त्रोफीमोव : सारा रूस ही हमारा उपवन है । बहुत बड़ी और बहुत सुन्दर है हमारी पृथ्वी और अनेक अद्भुत स्थान हैं उस पर ।

(खामोशी)

जरा सोचिये आन्या : आपके दादा-परदादा , आपके सभी पुरखे भूदासों के स्वामी थे , जीते-जागते लोगों को अपने गुलाम बनाकर रखते थे । क्या आपको बगीचे की हर चेरी , हर पत्ते , हर तने से कोई मानव अपनी ओर देखता हुआ प्रतीत नहीं होता , क्या आपको उनकी आवाजें सुनाई नहीं देतीं ... जिन्दा लोगों का मालिक होना — इसने आप सब को , आपके पुरखों और इस समय जीवितों को ऐसे बना दिया है कि आपकी मां , स्वयं आप और आपके मामा यह अनुभव ही नहीं करते कि आप लोग ऋणी हैं , दूसरों के सिर पर मौज करते हैं , उनके बल पर जीते हैं जिन्हें आप दहलीज से आगे कदम नहीं रखने देते ... हम कम से कम दो सौ साल पिछड़े हुए हैं , हमने अभी तक कुछ भी तो हासिल नहीं किया , अपने अतीत तक के लिये हमारा कोई निश्चित दृष्टिकोण नहीं है । हम तो सिर्फ फलसफ़े की टांग तोड़ा करते हैं , ऊब-उदासी का रोना रोते रहते हैं या वोदका पीते हैं ।

यह तो बिल्कुल साफ़ है कि वर्तमान में जीने के लिये हमें पहले तो अतीत के पाप धोने चाहिये, उनसे निजात हासिल करनी चाहिये और यह केवल तभी सम्भव है जब हम बहुत कष्ट उठायें, अत्यधिक और अथक श्रम करें। यह समझ लीजिये, आन्या।

आन्या : हम जिस मकान में रहते हैं, वह बहुत समय से ही हमारा नहीं है। आपको वचन देती हूं कि मैं इसे छोड़कर चली जाऊंगी।

त्रोफ़ीमोव : अगर आपके पास घर-गिरस्ती की कोई चाबियां-वाबियां हैं तो उन्हें कुएं में फेंकिये और यहां से चली जाइये। पवन की तरह मुक्त हो जाइये।

आन्या (उल्लासपूर्वक) : कितने सुन्दर ढंग से कहा है आपने यह !

त्रोफ़ीमोव : विश्वास कीजिये, आन्या, मुझ पर विश्वास कीजिये ! मैं अभी तीस साल का भी नहीं हुआ, अभी तक विद्यार्थी हूं, लेकिन कितना कुछ जाना-सहा है मैंने इस ज़िन्दगी में ! जाड़ा आते ही मुझे दो जून की रोटी भी नहीं मिलती, बीमारी आ दबाती है, मैं परेशान हो उठता हूं, भिखारी की तरह पैसे-पैसे को मोहताज हो जाता हूं और—कहां-कहां की ठोकरें खाने को मजबूर नहीं किया मुझे किस्मत ने, कहां-कहां नहीं भटकता फिरा हूं मैं ! फिर भी मेरी आत्मा में हमेशा, हर क्षण, दिन और रात एक अस्पष्ट-सी पूर्वानुभूति बनी रही है। मैं अनुभव कर रहा हूं कि सुख-सौभाग्य आयेगा। मैं उसे देख रहा हूं, आन्या ...

आन्या (सोच में डूबते हुए) : चांद निकल रहा है।

(येपिखोदोव गिटार पर वही उदासीमरी धुन बजाता सुनाई देता है। चांद निकल रहा है। चिनारों के निकट वार्या आन्या

को ढूँढ़ रही है और पुकारती है: “आन्या! कहां हो तुम?”)

त्रोफ़ीमोव: हां, चांद निकल रहा है।

(खामोशी)

वह रहा सुख-सौभाग्य, वह आ रहा है, अधिकाधिक निकट आता जा रहा है, मुझे उसकी आहट मिल रही है। अगर हम उसे नहीं देख पायेंगे, नहीं जान सकेंगे, तो इससे क्या फ़र्क पड़ता है? उसे दूसरे देखेंगे!

(वार्या की आवाज़: “आन्या! तुम कहां हो?”)

फिर यह वार्या सिर पर सवार है! (झटकाकर) नाक में दम आ गया है इसके मारे!

आन्या: कोई परवाह नहीं करें। आइये, नदी पर चलें। वहां बहुत अच्छा है।

त्रोफ़ीमोव: चलिये।

(जाते हैं)

(वार्या की आवाज़: “आन्या! आन्या!”)

(परदा गिरता है)

तीसरा अंक

(बड़े हॉल को एक मेहराब द्वारा अलग करके दीवानखाना बनाया गया है। एक झाड़ जल रहा है। बाहरी कमरे में यहूदियों का वही आर्केस्ट्रा बज रहा है जिसका दूसरे अंक में उल्लेख हो चुका है। दीवानखाने में 'ग्रेड रोंड' नाच नाचा जा रहा है। सिमेओनोव-पीश्चिक फ़्रांसीसी भाषा में यह चिल्लाता सुनाई दे रहा है: "जोड़ों में आइये!" पीश्चिक और शर्लॉत्ता का पहला जोड़ा दीवानखाने में दाखिल होता है। दूसरे जोड़े में त्रोफ़ीमोव तथा ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना हैं, तीसरे में डाकखाने का क्लर्क और आन्या, चौथे में वार्या तथा स्टेशन मास्टर, आदि, आदि। वार्या धीरे-धीरे सिसक रही है और अपने आंसू पोंछती जाती है। दुन्याशा अन्तिम जोड़े में आती है। यह जोड़ा नाचते हुए दीवानखाने को लांघ जाता है। पीश्चिक फ़्रांसीसी में चिल्लाता है: "बड़े-बड़े घेरे बनाइये! अपनी-अपनी नृत्य-संगिनी को धन्यवाद देते जाइये!")

(फ़ाक-कोट पहने हुए फ़ीर्स ट्रे में सोडावाटर के गिलास लाता है। पीश्चिक और त्रोफ़ीमोव दीवानखाने में आते हैं)

पीश्चिक: मुझमें चर्बी बहुत ज्यादा है, दो बार दिल के दौरे भी पड़ चुके हैं। मेरे लिये नाचना आसान नहीं। लेकिन यहां तो वही बात है कि अगर कुत्तों के गोल में शामिल हो गये तो भोंको या न भोंको, मगर दुम तो हिलाओ ही। यों मैं घोड़े की तरह हट्टा-कट्टा हूं। मेरे दिवंगत पिता, जिन्हें हंसी-मज़ाक बहुत पसन्द था, अक्सर कहा करते थे मानो हम उसी घोड़े के वंशज हैं जिसे कालीगुल ने सीनेट-सदस्य बनाया था ... (बैठ जाता है) लेकिन मुसीबत सिर्फ़ यही है कि पैसे नहीं हैं! बिल्ली

को चूहों के ही सपने आते हैं... (खरटि लेता है और उसी क्षण जाग जाता है) यही हाल मेरा है... मैं पैसों के ही सपने देखा करता हूं...

त्रोफ़ीमोव : आपकी शक्ल-सूरत में सचमुच घोड़े जैसा कुछ है।

पीश्चिक : तो क्या हुआ... घोड़ा अच्छा जानवर है... उसे बेचा जा सकता है...

(बगल के कमरे में बिलियर्ड खेले जाने की आवाज़ सुनाई देती है। हॉल में मेहराब के नीचे वार्या नझर आती है)

त्रोफ़ीमोव (चिढ़ाता है) : मदाम लोपाखिना, मदाम लोपाखिना !

वार्या (खीझकर) : फटीचर रईसज़ादा !

त्रोफ़ीमोव : हां, मैं फटीचर रईसज़ादा हूं और मुझे इस बात का गर्व है !

वार्या (कटुता से) : आर्कस्ट्रावालों को बुला तो लिया, मगर उन्हें देने के लिये पैसे कहां से आयेंगे? (जाती है)

त्रोफ़ीमोव (पीश्चिक से) : अपने कर्ज़ों का ब्याज चुकाने के लिये आपने जीवन में जितनी शक्ति खर्च की है, अगर उसी को किसी दूसरे काम में लगाते तो दुनिया को इधर से उधर कर देते।

पीश्चिक : प्रसिद्धतम, महानतम... अत्यधिक मेधावी दार्शनिक नीत्शे... उसने अपनी रचनाओं में कहा है मानो जाली नोट बनाना कुछ बुरा नहीं।

त्रोफ़ीमोव : आपने नीत्शे को पढ़ा है?

पीश्चिक : बात यह है... मुझे तो दाशा ने बताया है। मेरी अब ऐसी ही हालत है कि जाली नोट बनाऊं... परसों मुझे तीन सौ दस रूबल देने ही हैं... एक सौ तीस मैंने हासिल कर

लिये हैं ... (अपनी जेबों को टटोलता है, घबरा जाता है)
रूबल गायब हो गये ! खो गये रूबल ! (आंसू बहाते हुए)
कहां चले गये रूबल ? (खुश होकर) ये रहे कमबख्त , अस्तर
में जा घुसे थे ... मुझे तो ठण्डे पसीने भी आ गये ...

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना और शर्लोत्ता इवानोव्ना आती हैं)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (काकेशिया का एक द्रुत लय का लोक-
गीत जिसे 'लेज़गीन्का' कहते हैं, गाती है) : लेओनीद अभी
तक क्यों नहीं लौटा ? क्या कर रहा है वह शहर में ? (दुन्याशा
से) दुन्याशा , आर्कस्ट्रावालों को चाय तो पिला दीजिये ...

त्रोफ़ीमोव : शायद अभी तक नीलामी न हुई हो ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : आर्कस्ट्रावालों को भी बेमौक़े बुला लिया
और नाच-गाने के लिये भी ठीक वक्त नहीं है ... पर खैर ,
कोई बात नहीं ... (बैठकर धीरे-धीरे गुनगुनाती है)

शर्लोत्ता (पीश्चिक को ताश की गड्डी देती है) : यह लीजिये
ताश की गड्डी , कोई एक पत्ता सोच लीजिये ।

पीश्चिक : सोच लिया ।

शर्लोत्ता : अब पत्तों को फेंट दीजिये । बहुत ठीक । लाइये ,
अब यह मुझे दे दीजिये , मेरे प्यारे महानुभाव पीश्चिक । एक ,
दो , तीन ! अब आप इसे अपनी बग़ल की जेब में दूढ़िये ...

पीश्चिक (बग़ल की जेब से पत्ता निकालता है) : हुकम
का अट्टा , बिल्कुल ठीक ! (हैरान होते हुए) वाह , ज़रा ग़ौर
कीजिये ।

शर्लोत्ता (ताश की गड्डी हथेली पर रखे हुए त्रोफ़ीमोव से) :
जल्दी से बताइये , सबसे ऊपरवाला पत्ता क्या है ?

त्रोफ़ीमोव : सबसे ऊपरवाला ? हुकम की बेग़म ।

शर्लोत्ता : अच्छी बात है ! (पीडिचक से) अब आप बताइये , सबसे ऊपरवाला पत्ता क्या है ?

पीडिचक : पान का इक्का ।

शर्लोत्ता : अच्छी बात है ! (ताली बजाती है और ताश की गड्डी गायब हो जाती है) कैसा सुहावना मौसम है आज !

(फ़र्श के नीचे से आती प्रतीत होनेवाली किसी नारी की रहस्य-मयी आवाज़ उत्तर देती है : “ हां , बहुत ही बढ़िया मौसम है , श्रीमती जी ! ”)

आप हैं मेरी सुन्दरता की अनुपम देवी ...

(आवाज़ : “ आप भी मुझे बहुत अच्छी लगती है , देवी जी । ”)

स्टेशन मास्टर (ताली बजाता है) : आपने तो कमाल ही कर दिया । क्या खूब साधा है अपनी आवाज़ को !

पीडिचक (हैरान होते हुए) : वाह , ज़रा ग़ौर कीजिये ! ओ हसीना शर्लोत्ता इवानोव्ना ... मैं तो आप पर जी-जान से मर मिटा हूँ ...

शर्लोत्ता : आप , मर मिटे हैं ? (कंधे झटकती है) यह सूरत और मुहब्बत ? (जर्मन कहावत बोलती है) आप हैं अच्छे इन्सान , मगर आपकी बेसुरी है तान ।

त्रोफ़ीमोव (पीडिचक के कंधे पर हाथ मारकर) : तो घोड़े ही हैं आप जनाब ...

शर्लोत्ता : कृपया ध्यान दीजिये , एक और खेल देखिये । (कुर्सी से कम्बल उठाती है) देखिये , यह बहुत अच्छा कम्बल

है, मैं इसे बेचना चाहती हूं ... (उसे भाड़ती है) कोई खरीदना चाहता है ?

पीडिचक (हैरान होते हुए) : ज़रा गौर कीजिये !

शर्लोत्ता : एक, दो, तीन ! (नीचे लटके हुए कम्बल को ऊपर उठाती है—उसके पीछे आन्या खड़ी दिखाई देती है। वह झुककर अभिवादन करती है, भागकर मां के पास जाती है, उसका आलिंगन करती है और हर्ष-उल्लास के वातावरण में हॉल में वापस भाग जाती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (खुश होकर ताली बजाती है) : कमाल है, कमाल है ! ..

शर्लोत्ता : एक और खेल देखिये ! एक, दो, तीन। (कम्बल ऊपर उठाती है, कम्बल के पीछे वार्या खड़ी दिखाई देती है। वह अभिवादन करती है)

पीडिचक (हैरान होकर) : ज़रा गौर कीजिये !

शर्लोत्ता : बस, अब खेल खत्म ! (कम्बल को पीडिचक के ऊपर फेंककर अभिवादन करती है और हॉल में भाग जाती है)

पीडिचक (उसके पीछे भागता है) : ओह, शैतान कहीं की ... ओह, कैसी लड़की है ? ओह, कैसी लड़की है ? (जाता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : लेओनीद अभी तक नहीं आया। मेरी समझ में नहीं आता कि अभी तक वह शहर में क्या कर रहा है ! वहां तो सभी कुछ खत्म हो चुका है। जागीर बिक चुकी है या नीलाम ही नहीं हुआ। किसलिये हमें इतनी देर तक दुविधा में रखा जा रहा है !

वार्या (उसे तसल्ली देने की कोशिश करते हुए) : मामा जी ने ही खरीद ली है जागीर, मुझे इसका पूरा विश्वास है।

त्रोफ़ीमोव (मज़ाक़ उड़ाते हुए) : हां, खरीद ली होगी।

वार्या : नानी ने मामा जी को अधिकार पत्र भेजा है कि वह कर्ज को उनके ज़िम्मे डालकर उनके नाम से जागीर खरीद लें। वह आन्या के लिये ऐसा कर रही हैं। मुझे विश्वास है कि भगवान हमारी सहायता करेगा और मामा जी जागीर खरीद लेंगे।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यारोस्लाव् वाली तुम्हारी नानी ने, जो हम पर भरोसा नहीं करतीं, अपने नाम से जागीर खरीदने के लिये पन्द्रह हजार रूबल भेजे हैं। लेकिन, यह रकम तो ब्याज चुकाने के लिये भी काफी नहीं होगी। (हाथों से मुंह ढांप लेती है) आज मेरी किस्मत का फ़ैसला हो रहा है, मेरी किस्मत का ...

त्रोफ़ीमोव (वार्या को चिढ़ाता है) : मदाम लोपाखिना !

वार्या (भुंभुलाकर) : चिरन्तन विद्यार्थी ! दो बार यूनि-वर्सिटी से निकाले जा चुके हो।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तुम ऐसे खीझ क्यों रही हो, वार्या ? वह लोपाखिन का नाम लेकर ही तुम्हें चिढ़ाता है न, तो क्या हुआ ? मन करता है तो लोपाखिन से शादी कर लो। वह अच्छा और दिलचस्प आदमी है। अगर मन नहीं करता तो नहीं करो उससे शादी। मेरी प्यारी कोई मजबूर नहीं कर रहा तुम्हें ऐसा करने को ...

वार्या : अम्मां, आपसे साफ़-साफ़ कहना चाहती हूं कि मैं इस मामले को बहुत गम्भीर मानती हूं। वह भला आदमी है, मुझे अच्छा लगता है।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तो कर लो शादी। इन्तज़ार किस बात का है, मेरी समझ में नहीं आता !

वार्या : अम्मां, मैं स्वयं तो उससे ऐसा करने को नहीं कह सकती। दो साल हो गये सभी उसके साथ मेरा नाम जोड़ते हैं,

इस बात की चर्चा करते हैं, किन्तु वह या तो चुप रहता है या मज़ाक़ करता है। मैं यह सब समझती हूँ। वह दिनोदिन अमीर होता जा रहा है, अपने काम-काज में लगा रहता है, उसे मेरे बारे में सोचने की फ़ुरसत नहीं। अगर मेरे पास पैसे होते, बेशक थोड़े ही, अधिक नहीं तो सौ रूबल भी होते तो मैं सब कुछ छोड़-छाड़कर यहां से कहीं दूर चली जाती। किसी मठ में जाकर रहने लगती।

त्रोफ़ीमोव : भई वाह, तब तो मज़ा ही आ जाता !

वार्या (त्रोफ़ीमोव से) : विद्यार्थी को समझदार होना चाहिये। (आंखों में आंसू भरकर नर्मी से) कैसे बदसूरत हो गये तुम, पेट्या। कितने बुढ़ा गये हो ! (रोना बन्द करके ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से) सिर्फ़ एक ही चीज़ मुझसे बर्दाश्त नहीं होती - मैं काम के बिना ठाली नहीं बैठी रह सकती, अम्मां। मुझे तो हर वक़्त कुछ न कुछ करते रहना चाहिये।

(याशा आता है)

याशा (बड़ी मुश्किल से हंसी रोककर) : येपिखोदोव ने बिलियर्ड खेलने का डंडा तोड़ दिया है !.. (जाता है)

वार्या : येपिखोदोव किसलिये यहां है ? उसे बिलियर्ड खेलने की इजाज़त किसने दी ? कैसे हैं ये लोग, मेरी समझ में नहीं आता ... (जाती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : इसे चिढ़ाया नहीं करो, पेट्या। वह तो यों ही बहुत दुखी रहती है।

त्रोफ़ीमोव : वह बहुत ही ज़्यादा रोब जमाती रहती है, हर चीज़ में टांग अड़ाया करती है। गर्मी भर इसने मुझे और आन्या को चैन नहीं लेने दिया। इसे यही धुकधुकी लगी रही कि कहीं हम एक-दूसरे को प्यार न करने लगे। इसे इस चीज़

से क्या लेना-देना है? फिर मैंने तो कभी ऐसा अन्देशा पैदा करने का मौका भी नहीं दिया। मैं तो ऐसी घटिया बातों से बहुत दूर हूँ। हम प्यार से ऊपर हैं!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: तब तो यह कहना होगा कि मैं प्यार से नीचे हूँ। (बहुत बेचैनी से) लेओनीद अभी तक क्यों नहीं लौटा? सिर्फ़ इतना ही पता चल जाये कि जागीर बिकी या नहीं? मुझे यह मुसीबत इतनी भयानक लगती है कि समझ में नहीं आता कि मैं इसके बारे में क्या सोचूं, मेरी अक्ल बिल्कुल काम नहीं करती... मैं अभी चीखने-चिल्लाने लग सकती हूँ... कोई बेवकूफी कर सकती हूँ। मुझे बचाओ, पेट्या। मुझसे कोई बात करो, कुछ कहो...

त्रोफीमोव: जागीर आज बिक गयी या नहीं बिकी—इससे कोई फ़र्क़ पड़ता है क्या? वह तो कभी की हाथ से जा चुकी, पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं, सब कुछ ख़त्म हो चुका। अपने को शान्त कीजिये, ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना। अपने को धोखे में नहीं रखिये, जीवन में कम से कम एक बार तो सचाई का सामना कीजिये।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: किस सचाई का? तुम यह देखते हो कि कहां सच और कहां भूठ है, लेकिन मैं तो जैसे अपनी आंखों की रोशनी खो चुकी हूँ, मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता। तुम सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों को क्या इसीलिये साहस से हल नहीं कर लेते हो कि तुम जवान हो, तुम्हें अपनी किसी भी समस्या के लिये दुःख-दर्द नहीं सहना पड़ा? तुम हिम्मत से भविष्य की ओर देखते हो तो क्या इसीलिये नहीं कि तुम्हें न तो कुछ भयानक दिखाई देता है और न तुम्हें उसकी आशंका ही है, क्योंकि तुम्हारी जवान आंखों के सामने जीवन का विस्तार अभी पूरी तरह उभरा नहीं? हम लोगों की तुलना में तुम लोग

अधिक साहसी, अधिक ईमानदार, अधिक गहन हो। किन्तु तुम तनिक सोच-विचार करो, थोड़ी-सी उदारता दिखाओ, मुझ पर दया करो। आखिर यहीं तो मेरा जन्म हुआ था, यहीं तो मेरे माता-पिता, मेरे दादा रहे। इस घर से मुझे प्यार है, चेरी की बगिया के बिना मैं अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकती। अगर इसे बेचना ही है तो इसके साथ-साथ मुझे भी बेच डाला जाये ... (त्रोफ़ीमोव को बांहों में भर लेती है, उसका माथा चूमती है) मेरा बेटा भी तो यहीं नदी में डूब गया था ... (रोती है) मुझ पर दया करो, भले, दयालु आदमी।

त्रोफ़ीमोव : आप तो जानती ही हैं कि मैं आपके प्रति हार्दिक सहानुभूति रखता हूं।

ल्युबोव अन्ट्रेयेव्ना : किन्तु इस बात को दूसरे ढंग से कहना चाहिये, दूसरे ढंग से ... (रुमाल निकालती है, फ़र्श पर एक तार गिर जाता है) तुम सोच भी नहीं सकते कि आज मेरा मन कितना भारी है। यहां बहुत शोर-गुल है, हर आवाज़ से मेरा दिल कांप उठता है, मैं सिर से पांव तक कांप रही हूं, किन्तु अपने कमरे में नहीं जा सकती, मुझे अकेली को सन्नाटे में डर लगता है। मेरी भर्त्सना-निन्दा नहीं करो, पेट्या ... मैं तुम्हें अपने बेटे की तरह चाहती हूं। क़सम खाकर कहती हूं कि मैं तो खुशी से तुम्हारे साथ आन्या की शादी भी कर देती। किन्तु भैया, तुम्हें पढ़ना चाहिये, अपनी पढ़ाई ख़त्म करनी चाहिये। तुम कुछ भी तो नहीं करते। किस्मत तुम्हें कभी यहां तो कभी वहां फेंक देती है। बड़ी अजीब बात है यह ... मैं सच कह रही हूं न? दाढ़ी के मामले में भी कुछ करना चाहिये ताकि यह किसी तरह ढंग से बढ़ जाये ... (हंसती है) तुम्हें देखकर हंसी आती है।

त्रोफ़ीमोव (तार उठाता है) : मैं कोई यूसुफ़ नहीं बनना चाहता ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह तार पेरिस से आया है । हर दिन तार आता है । कल आया था , आज आया है । वह जंगली आदमी फिर से बीमार हो गया है , फिर से उसकी हालत खराब है ... वह क्षमा मांगता है , मुझसे लौटने का अनुरोध करता है । सच बात तो यह है कि मुझे पेरिस जाना चाहिये , उसके पास जाना चाहिये । तुम्हारे चेहरे पर कड़ाई का भाव है , पेट्या । लेकिन क्या किया जाये , भैया , मैं क्या करूं । वह बीमार है , अकेला है , दुखी है । कौन वहां उसकी देख-भाल करता होगा , कौन उसे कोई ग़लती करने से रोकेगा , कौन उसे वक्त पर दवा-दारू देगा ? फिर इसमें छिपाने या चुप रहने की कौन-सी बात है — यह तो स्पष्ट है कि मैं उसे प्यार करती हूं । प्यार करती हूं , प्यार करती हूं ... वह मेरे गले में बंधा हुआ पत्थर है , मैं उसके साथ तल में जा रही हूं , मगर मैं इस पत्थर को प्यार करती हूं और उसके बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती । (**त्रोफ़ीमोव का हाथ दबाती है**) मेरे बारे में कुछ बुरा नहीं सोचो , पेट्या । मुझसे कुछ नहीं कहो , कुछ भी नहीं ...

त्रोफ़ीमोव (रुंधे कण्ठ से) : भगवान के लिये मुझे क्षमा करें कि मैं आपसे साफ़-साफ़ यह कह रहा हूं — लेकिन उसी ने तो आपको लूटा है !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : नहीं , नहीं , नहीं , ऐसा नहीं कहो ... (**कानों में उंगलियां ठूस लेती है**)

त्रोफ़ीमोव : सिर्फ़ अकेली आप ही यह नहीं जानतीं कि वह कमीना है ! वह बहुत कमीना , बड़ा नीच है ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (नाराज़गी से , मगर अपने पर क़ाबू पाते हुए) : तुम छब्बीस या सत्ताईस साल के हो गये हो , लेकिन

अभी तक स्कूली छोकरोँ जैसी बातें करते हो !

त्रोफ़ीमोव : तो क्या हुआ !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तुम्हें मर्द होना चाहिये, इस उम्र में तो प्यार करनेवालों को समझना चाहिये। और खुद को भी प्यार करना चाहिये ... प्यार में दीवाना होना चाहिये ! (बिगड़ते हुए) तुम पवित्र नहीं, पवित्रता का ढोंग करते हो, तुम सिरफिरे सनकी हो, भक्की हो ...

त्रोफ़ीमोव (बेहद परेशान होकर) : क्या कह रही हैं आप !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : “ मैं प्यार से ऊपर हूं ! ” तुम प्यार से ऊपर नहीं, बल्कि, जैसा कि हमारा फ़ीर्स कहता है — बौड़म हो। तुम्हारी उम्र में किसी प्रेमिका के बिना होना, यह भी कोई बात है ! ..

त्रोफ़ीमोव (बहुत परेशान होकर) : यह तो हद ही हो गयी ! यह आप क्या कह रही हैं ? ! (अपना सिर हाथों में थामकर जल्दी से हॉल में चला जाता है) उफ़, यह तो हद ही हो गयी, मैं यह सब नहीं सह सकता, मैं जाता हूं ... (जाता है, मगर उसी वक्त लौटता है) हमारे बीच अब सब कुछ ख़त्म समझिये ! (इयोदी की तरफ़ जाता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (उसे पुकारती है) : पेट्या, रुक जाओ ! तुम भी कैसे अजीब आदमी हो, मैंने तो मज़ाक़ किया था ! पेट्या !

(यह सुनाई देता है कि इयोदी में कोई तेज़ी से जीने से नीचे उतर रहा है और फिर अचानक धम से गिर जाता है। आन्या और वार्या चीख़ उठती हैं, किन्तु उसी समय हंसी सुनाई देती है)

क्या हो गया ?

(आन्या भागी हुई आती है)

आन्या (हंसते हुए) : पेत्या जीने से उतरते हुए गिर पड़ा !
(वापस भाग जाती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह भी एक नमूना ही है, यह पेत्या ...

(स्टेशन मास्टर हॉल के बीचोंबीच खड़ा होकर अलेक्सेई तोल-स्तोय की “ पापिन ” कविता पढ़ रहा है। सभी उसे सुनते हैं, किन्तु उसके कुछ पंक्तियां पढ़ने पर ही ड्योदी से वाल्ज नृत्य की धुन सुनाई देने लगती है और कविता-पाठ अधूरा रह जाता है। सभी नाचने लगते हैं। त्रोक्रीमोव, आन्या, वार्या और ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना ड्योदी में से बाहर आते हैं)

तो पेत्या, पवित्र आत्मा ... मैं माफ़ी मांगती हूं ... आओ, नाचें ...
(पेत्या के साथ नाचती है)

(आन्या और वार्या नाचती हैं)

(फ़ीर्स आता है, अपनी छड़ी को बगलवाले कमरे के दरवाजे के साथ टिका देता है। दीवानखाने से याशा भी आ जाता है, नाचनेवालों को देखता है)

याशा : क्या बात है, दादा ?

फ़ीर्स : तबीयत कुछ अच्छी नहीं। पहले तो हमारे यहां बॉल-नृत्य में जनरल, नवाब और एडमिरल आते थे, मगर अब हम डाकखाने के क्लर्क और स्टेशन मास्टर को बुलवाते हैं और वे भी आते हुए नखरा दिखाते हैं। मुझे कमजोरी महसूस हो रही है। हमारे बड़े मालिक, भगवान को प्यारे हो गये इनके दादा सभी बीमारियों के लिये हमें मुहर लगाने की लाख दिया करते

थे। मैं बीस या इससे ज्यादा सालों से हर दिन ही लाख का सेवन करता हूं। शायद इसी की बदौलत ज़िन्दा हूं।

याशा : तुम भी बड़ी मुसीबत हो, दादा। (जम्हाई लेता है)
जल्दी से दूसरी दुनिया की राह लो।

फ्रीस : अरे तुम ... बौड़म ! (बड़बड़ाता है)

(त्रोफ़ीमोव और ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना हॉल में, फिर दीवानख़ाने में नाचते हैं)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : धन्यवाद ! मैं बैठूंगी ... (बैठती है) थक गयी।

(आन्या आती है)

आन्या (विह्वलता से) : रसोईघर में अभी कोई आदमी कह रहा था कि चेरी की बगिया बिक गयी।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : किसने खरीदी ?

आन्या : यह तो उसने नहीं बताया। चला गया। (त्रोफ़ीमोव के साथ नाचती है, दोनों हॉल में जाते हैं)

याशा : वहां एक बुढ़ा यह कह रहा था। कोई अजनबी।

फ्रीस : लेओनीद अन्द्रेयेविच अभी तक नहीं आये। वह तो हल्का-सा ओवरकोट पहने हुए हैं। ठण्ड खा जायेंगे। ओह, इन जवान लोगों को कभी अक्ल नहीं आयेगी !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मेरी तो अभी जान निकल जायेगी। याशा, जाकर पता करो कि किसने खरीदी है चेरी की बगिया।

याशा : लेकिन वह तो कभी का चला गया, वह बुढ़ा तो।
(हंसता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (कुछ नाराज़ होते हुए) : तुम्हें किस

बात की हंसी आ रही है ? खुश होने की क्या बात है ?

याशा : यह येपिखोदोव भी खूब है , उस पर हंसी आये बिना नहीं रहती । न किसी काम का , न काज का । नित नयी मुसीबत ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : फ़ीर्स , अगर जागीर बिक गयी तो तुम कहां जाओगे ?

फ़ीर्स : आप जहां जाने का हुक्म देंगी , वहीं चला जाऊंगा ।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तुम्हारा चेहरा ऐसा मुरझाया-सा क्यों है ? तबीयत अच्छी नहीं है क्या ? सुनो , जाकर सो जाओ ...

फ़ीर्स : हां ... (व्यंग्यपूर्वक) मैं जाकर सो रहूं तो मेरे बिना कौन यहां सारे काम करेगा , सभी तरह की व्यवस्था करेगा ? सारे घर की मुझे ही तो फ़िक्र रहती है ।

याशा (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से) : ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना ! आपसे एक प्रार्थना करने की अनुमति चाहता हूं ! अगर आप फिर से पेरिस जायें तो मेहरबानी करके मुझे भी अपने साथ लेती जायें । मेरे लिये यहां रहना बिल्कुल असंभव है । (इधर-उधर देखकर , दबी आवाज़ में) आपसे कुछ कहने की भला क्या ज़रूरत है , आप तो खुद ही देखती हैं कि यह जाहिलों-अनपढ़ों का देश है , लोगों में धर्म-ईमान नहीं , यहां ऊब से दम निकलता है , खाना बेहूदा मिलता है और फिर यह फ़ीर्स हर वक्त कुछ बड़बड़ाता , उल्टी-सीधी बातें करता रहता है । इतनी मेहरबानी कीजिये , मुझे अपने साथ ले चलियेगा !

(पीश्चिक आता है)

पीश्चिक : आपको अपने साथ वाल्ज़ नाच नाचने के लिये आमन्त्रित करने की अनुमति चाहता हूं , अतीव सुन्दरी ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना ... (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना उसके साथ जाती है) आप यक़ीन मानिये , एक सौ अस्सी रूबल तो मैं हर हालत में आपसे

ले ही लूंगा , जादू करनेवाली देवी जी ... ले ही लूंगा ... (नाचते हैं) एक सौ अस्सी रूबल ...

(हॉल में पहुंच जाते हैं)

याशा (धीरे-धीरे गुनगुनाता है) : “ समझ सकोगी क्या तुम मेरे दिल की बेचैनी ... ”

(हॉल में ऊंचा टोप और चौखानेदार पतलून पहने एक आकृति दिखाई देती है जो जोर से हाथ हिलाती और उछलती-कूदती है ।
“ शाबाश , शर्लॉत्ता इवानोव्ना , शाबाश ! ” आवाजें सुनाई देती हैं)

दुन्याशा (पाउडर लगाने के लिये रुकती है) : छोटी मालिकिन ने मुझसे नाचने को कहा है , क्योंकि पुरुष अधिक और महिलायें कम हैं । लेकिन मेरा तो नाच से सिर चकराने और दिल धड़कने लगता है । फ्रीर्स निकोलायेविच , डाकखाने के क्लर्क ने अभी-अभी मुझसे ऐसी बात कही कि मेरी तो ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी ।

(संगीत धीमा हो जाता है)

फ्रीर्स : क्या कहा उसने तुझसे ?

दुन्याशा : उसने कहा कि आप तो फूल जैसी हैं ।

याशा (जम्हाई लेता है) : बदतमीजी है ... (जाता है)

दुन्याशा : फूल जैसी हैं ... मैं तो ऐसी नाजुक लड़की हूं , प्यारे-प्यारे शब्द मुझे बहुत अच्छे लगते हैं ।

फ्रीर्स : उलटे चक्कर में पड़ जायेगी तू ।

(येपिस्त्रोदोव आता है)

येपिस्त्रोदोव : अब्दोत्या फ्योदोरोव्ना, आप तो मुझसे कन्नी काटती रहती हैं ... जैसे कि मैं कोई कीड़ा-मकोड़ा होऊं। (आह भरता है) हाय, जिन्दगी !

दुन्याशा : आप क्या चाहते हैं ?

येपिस्त्रोदोव : बेशक, शायद आप ठीक ही हों। (आह भरता है) किन्तु यदि एक दृष्टिकोण से देखा जाये तो आप मुझे इस तरह से अपने को अभिव्यक्त करने, साफ़-साफ़ बात कहने के लिये क्षमा करें कि आपने ही मेरे दिल की ऐसी हालत कर दी है। अपनी तक्रदीर को मैं जानता हूं, हर दिन ही मुझ पर कोई न कोई मुसीबत आती रहती है। लेकिन मैं बहुत पहले से ही इसका आदी हो चुका हूं और अपनी किस्मत पर मुस्कराता रहता हूं। आपने मुझसे वादा किया था और बेशक मैं ...

दुन्याशा : आपकी मिन्नत करती हूं कि इस बारे में हम बाद में बात करेंगे और इस समय तो आप मुझे परेशान नहीं करें। इस वक्त मैं सपने देख रही हूं। (अपने पंखे से खिलवाड़ करती है)

येपिस्त्रोदोव : मुझ पर हर दिन कोई न कोई मुसीबत आती रहती है और मैं, मुझे इस तरह से कहने की अनुमति दीजिये, केवल मुस्कराता रहता हूं, यहां तक कि हंसता भी हूं।

(हॉल में से वार्या आती है)

वार्या : तुम अभी तक नहीं गये, सेम्योन ? तुमसे जो कुछ भी कहा जाता है, तुम तो उसकी रत्ती भर परवाह नहीं करते। (दुन्याशा से) जाओ यहां से, दुन्याशा। (येपिस्त्रोदोव से) बिलियर्ड खेलने लगे और उसका डंडा तोड़ दिया, अब मेहमान की तरह दीवानखाने में चहलकदमी कर रहे हो।

येपिस्त्रोदोव : मुझे यह कहने की इजाजत दीजिये कि आप मुझसे जवाबतलबी नहीं कर सकतीं।

वार्या : मैं जवाबतलबी नहीं कर रही हूँ, सिर्फ़ कह रही हूँ। बस, इधर से उधर घूमते रहते हो, कोई काम-काज नहीं करते। तुम्हें यहां क्लर्क रखा हुआ है — मालूम न जाने किसलिये।

येपिस्त्रोदोव (बुरा मानते हुए) : मैं काम करता हूँ या घूमता हूँ, खाता-पीता हूँ या बिलियर्ड खेलता हूँ, इस सबके बारे में सयाने और बड़ी उम्र के लोग ही अपनी राय जाहिर कर सकते हैं।

वार्या : तुम मुझसे यह कहने की हिम्मत रखते हो ! (भड़क-कर) तुम्हारी यह मजाल ? मतलब यह कि मैं कुछ भी नहीं जानती-समझती ? चलो, दफ़ा हो जाओ यहां से ! इसी वक्त !

येपिस्त्रोदोव (डरकर) : आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे नहीं बोलें।

वार्या (आपे से बाहर होकर) : इसी वक्त दफ़ा हो जाओ यहां से ! इसी वक्त !

(वह दरवाजे की तरफ़ जाता है और वार्या भी उसके पीछे-पीछे जाती है)

नित नई मुसीबत ! खबरदार, जो तुम्हारी छाया भी यहां नज़र आये ! खबरदार, जो मेरी आंखों के सामने आये !

(येपिस्त्रोदोव बाहर जाता है। दरवाजे के बाहर से उसकी आवाज़ सुनाई देती है : “ मैं आपके खिलाफ़ शिकायत करूंगा। ”)

तो तुम वापस आ रहे हो ? (दरवाजे के पास फ़ीर्स द्वारा रखी छड़ी उठा लेती है) आओ ... आओ ... आओ, देखना, मैं

तुम्हारी कैसी खबर लेती हूं ... वापस आ रहे हो? आ रहे हो न? तो लो मज़ा ... (छड़ी घुमाती है और इसी वक्त लोपाखिन प्रवेश करता है)

लोपाखिन : बहुत , बहुत आभारी हूं आपका ।

वार्या (गुस्से और मज़ाक़ से) : क्षमा चाहती हूं !

लोपाखिन : कोई बात नहीं। ऐसे मधुर स्वागत के लिये हृदय से धन्यवाद देता हूं ।

वार्या : धन्यवाद की ज़रूरत नहीं। (जाती है , फिर पीछे मुड़कर देखती है और नम्रता से पूछती है) आपको कहीं चोट तो नहीं लग गयी ?

लोपाखिन : नहीं , ऐसा कुछ नहीं हुआ । बस , बड़ा-सा गुमटा उभर आया है ।

(हॉल में आवाज़ सुनाई देती है : “ लोपाखिन आ गया ! येर्मोलाई अलेक्सेयेविच आ गया ! ”)

पीशिचक : मैं उसे अपनी आंखों से देखूं , अपने कानों से सुनूं ... (लोपाखिन और पीशिचक एक-दूसरे को चूमते हैं) मेरे प्यारे , मेरे दोस्त , तुमसे तो ब्रांडी की महक आ रही है । हम भी यहां अपना दिल खुश कर रहे हैं ।

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना आती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : अरे , यह आप हैं , येर्मोलाई अलेक्सेयेविच ? इतनी देर किसलिये कर दी ? लेओनीद कहाँ है ?

लोपाखिन : लेओनीद अन्द्रेयेविच मेरे साथ ही आये हैं । अभी आ जायेंगे ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (बेचैनी से) : तो वहां क्या हुआ ? नीलाम हुआ ? बताइये न।

लोपास्त्रिन (घबराहट महसूस करते हुए कि कहीं उसकी खुशी जाहिर न हो जाये) : नीलाम तो चार बजे के करीब खत्म हो गया था ... हम गाड़ी न पकड़ पाये और इसलिये साढ़े नौ बजे तक इन्तज़ार करना पड़ा। (गहरी सांस लेता है) ओह ! मेरा थोड़ा सिर चकरा रहा है ...

(गायेव आता है, 'उसके दायें हाथ में खरीदा हुआ सामान है, बायें हाथ से वह आंसू पोंछता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: ल्योन्या, क्या हुआ वहां ? बोलो न ल्योन्या ?

(आंसू भरकर अधीरता से) भगवान के लिये जल्दी से बताओ न ...

गायेव (कोई जवाब नहीं देता, सिर्फ हाथ झटककर रह जाता है। रोते हुए फ्रीर्स से) : यह ले लो ... यहां हेरिंग और खाने का कुछ दूसरा सामान है ... मैंने आज एक दाना तक मुंह में नहीं डाला ... कितना कुछ सहना पड़ा है मुझे !

(बिलियर्ड के कमरे का दरवाजा खुला है, वहां से गेंदों के टकराने और याशा की आवाज़ सुनाई देती है : " सात और अठारह ! " गायेव के चेहरे का भाव बदल जाता है, वह रोना बन्द कर देता है)

थककर चूर-चूर हो गया हूं। फ्रीर्स, ज़रा मेरे कपड़े तो बदलवा दो।

(हॉल को लांघते हुए अपने कमरे में जाता है, उसके पीछे-पीछे फ्रीर्स भी)

पीडिचक : नीलाम में क्या हुआ ? बताओ तो !
 ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : चेरी की बगिया बिक गयी ?
 लोपाखिन : बिक गयी ।
 ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : किसने खरीदी ?
 लोपाखिन : मैंने ।

(लामोशी)

(इस खबर से ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना का बुरा हाल हो जाता है । वह अगर कुर्सी और मेज के पास न खड़ी होती तो गिर पड़ती । वार्या कमरे से चाबियों का गुच्छा निकालती है और उसे दीवान-खाने के बीचोंबीच फर्श पर फेंककर चली जाती है)

मैंने खरीदी है । महानुभावो, कृपया ज़रा रुक जाइये, मेरा सिर चकरा रहा है, मुझसे बोला नहीं जा रहा ... (हंसता है) हम नीलाम में पहुँचे, देरीगानोव वहां पहले से मौजूद था । लेओनीद अन्द्रेयेविच के पास सिर्फ़ पन्द्रह हजार रूबल थे और देरीगानोव ने बक्राया क़र्ज़ के अलावा तीस हजार की बोली दी । मैंने देखा कि मामला चौपट हो रहा है, मैं सामने आ गया और मैंने चालीस हजार की बोली दे दी । उसने पैंतालीस हजार कहे, मैंने पचपन । मतलब यह कि वह पांच हजार बढ़ाता रहा और मैं दस ... आखिर बोली ख़त्म हुई । मैंने बक्राया क़र्ज़ के अलावा नब्बे हजार कहे और बोली मेरे नाम पर छूट गयी । चेरी की बगिया अब मेरी है । मेरी है ! (खिलखिलाकर हंसता है) हे भगवान, हे ईश्वर, चेरी की बगिया मेरी है ! मुझसे कहिये कि मैं नशे में हूँ, कि मेरा दिमाग़ चल निकला है, कि मैं यह केवल सपना देख रहा हूँ ... (पांव पटकता है) मुझ पर हंसिये नहीं ! काश मेरे बाप-दादा क़ब्रों से बाहर आकर यह सब देख

सकते कि कैसे उनके येर्मोलाई ने, उनके निकम्मे, बुद्ध येर्मोलाई ने, जो जाड़े में नंगे पांव भागा फिरता था, कैसे उसी येर्मोलाई ने वह जागीर खरीद ली है जिससे बढ़कर कोई जागीर दुनिया में नहीं है। मैंने वह जागीर खरीद ली है जहां मेरे पिता और दादा भूदास थे, जहां उन्हें रसोईघर तक नहीं जाने दिया जाता था। शायद मैं नींद में हूं, मुझे यह सपना-सा लग रहा है, सिर्फ ऐसे प्रतीत हो रहा है... यह तो केवल मेरी अज्ञानता के कोहरै से ढकी कल्पना की उड़ान है।... (स्नेहपूर्वक मुस्कराते हुए चाबियों का गुच्छा उठाता है) वार्या ने चाबियां फेंक दीं, यह दिखाना चाहती है कि वह यहां की मालिकिन नहीं है... (चाबियां बजाता है) खैर, कोई बात नहीं।

(आर्केस्ट्रा के बाजों को सुर में करने की आवाज सुनाई देती है)

अरे ओ बजवैयो, बजाओ बाजे, मैं सुनना चाहता हूं! सभी यह देखने आना कि कैसे येर्मोलाई लोपाखिन कुल्हाड़ा लेकर चेरी की बगिया को काटेगा, कैसे पेड़ कट-कटकर धरती पर गिरेंगे! यहां हम बंगले बनायेंगे और हमारे पोते-परपोते यहां नयी ज़िन्दगी को देख सकेंगे... बजवैयो, बजाओ बाजे!

(संगीत बजता है। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना कुर्सी पर बैठकर ज़ार-ज़ार रोती है)

(भर्त्सना करते हुए) किसलिये, किसलिये आपने मेरी बात नहीं मानी? ओह बेचारी, अच्छी ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, जो हो गया, उसे अब लौटाया नहीं जा सकता। (आंसू भरकर) काश, यह सब कुछ जल्दी से खत्म हो जाता, काश, किसी तरह हमारी

यह बेहूदा, दुख-दर्दों की मारी ज़िन्दगी जल्दी से बदल जाती।

पीडिचक (उसकी बांह थामकर, दबी आवाज़ में) : वह रो रही है। आओ हॉल में चलें, उसे यहां अकेली रहने दें... आओ चलें (उसकी बांह में बांह डालकर हॉल में ले जाता है)

लोपाखिन : यह क्या हो रहा है? बाजेवालो, अच्छी तरह से बाजे बजाओ! जैसे मैं चाहता हूं, सब कुछ वैसे ही होना चाहिये! (व्यंग्यपूर्वक) नया ज़मींदार, चेरी की बगिया का नया मालिक आ रहा है! (अचानक एक छोटी-सी मेज़ से टकरा जाता है, उस पर रखा हुआ शमादान गिरते-गिरते बचता है) मैं हर चीज़ की क़ीमत अदा कर सकता हूं। (पीडिचक के साथ चला जाता है)

(हॉल और दीवानख़ाने में ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना के सिवा कोई नहीं रह जाता जो सिकुड़-सिमटकर बैठी हुई फूट-फूटकर रोती है। संगीत धीरे-धीरे बजता रहता है। आन्या और त्रोफ़ीमोव तेज़ी से आते हैं। आन्या मां के पास आकर उसके सामने घुटनों के बल हो जाती है। त्रोफ़ीमोव दरवाज़े के पास खड़ा रहता है)

आन्या : अम्मां! .. अम्मां, तुम रो रही हो? मेरी प्यारी, दयालु, मेरी अच्छी, मेरी सुन्दर अम्मां, मैं तुम्हें प्यार करती हूं... तुम्हारे लिये भगवान से प्रार्थना करती हूं। चेरी की बगिया बिक गयी, वह अब हमारी नहीं रही। यह सच है, सच है, लेकिन तुम रोओ नहीं। अभी तो तुम्हारी ज़िन्दगी तुम्हारे सामने है, तुम्हारी अच्छी निर्मल आत्मा तुम्हारे पास है... आओ, मेरे साथ चलो, मेरी प्यारी अम्मां, आओ, यहां से चलें! .. हम एक नया बाग़ लगायेंगे, इससे कहीं अच्छा बाग़! तुम उसे

देखोगी और सब कुछ समझ आओगी। तुम्हारी आत्मा सन्ध्या के डूबते सूरज के प्रकाश की तरह हल्की-हल्की और गहन प्रसन्नता से ओत-प्रोत हो उठेगी और तुम मुस्कुरा दोगी ! आओ , चलें मेरी प्यारी अम्मां ! आओ चलें ! ..

(परदा गिरता है)

चौथा अंक

(पहले अंक जैसी मंच-सज्जा। खिड़कियों पर परदे नहीं हैं, दीवारों पर तस्वीरें भी नहीं, थोड़ा-सा फर्नीचर एक कोने में मानो बेचने के लिये इकट्ठा कर दिया गया है। घर खाली-खाली-सा लग रहा है। बाहर के दरवाजे और दूर मंच पर सूटकेस और गठरियों में बंधा हुआ सफ़र का सामान आदि रखा है। बायीं ओर का दरवाजा खुला है, जहां से वार्या और आन्या की आवाजें सुनाई दे रही हैं। लोपाखिन खड़ा हुआ इन्तज़ार कर रहा है। याशा शोम्पेन से भरे हुए गिलासों की ट्रे हाथ में लिये है। इयोदी में येपिखोदोव बक्स बांध रहा है। नेपथ्य में दबा-घुटा शोर सुनाई दे रहा है। यह किसानों का शोर है जो विदा लेने के लिये आये हैं। गायेव की आवाज: “शुक्रिया भाइयो, शुक्रिया।”)

याशा: मामूली किसान लोग विदा लेने आये हैं। येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, मेरी यह राय है कि मामूली लोग दयालु, मगर बहुत कम समझदार होते हैं।

(शोर बन्द हो जाता है। इयोदी में से ल्युबोव अन्त्रेयेव्ना और गायेव आते हैं। ल्युबोव अन्त्रेयेव्ना रो नहीं रही, किन्तु उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है, वह कांप रहा है, उसके लिये बात करना सम्भव नहीं)

गायेव: बहन, तुमने उन्हें अपना पर्स दे दिया। यह ठीक नहीं! ऐसा नहीं करना चाहिये था!

ल्युबोव अन्त्रेयेव्ना: मैं और कुछ कर ही नहीं सकती थी! कर ही नहीं सकती थी!

(दोनों जाते हैं)

लोपाखिन (उनके पीछे-पीछे, दरवाजे की तरफ मुंह करके) :
आपसे बिनती करता हूं ! जाने से पहले शेम्पेन का एक-एक
गिलास पीने की कृपा करें। मैं शहर से शेम्पेन लाना भूल गया
और स्टेशन पर सिर्फ एक ही बोतल मिली। मेहरबानी कीजिये !

(खामोशी)

तो आप लोग नहीं भीना चाहते ? (दरवाजे से हट जाता है)
अगर मालूम होता कि आप नहीं पियेंगे तो खरीदता ही नहीं।
तो मैं भी नहीं पियूंगा।

(याशा ट्रे को सावधानी से कुर्सी पर रख देता है)

और कोई नहीं पीता तो तुम ही पी लो, याशा।

याशा : सफ़र के लिये ! यहां रहनेवालों के सुख के लिये।
(पीता है) आपको यक़ीन दिला सकता हूं कि यह असली
शेम्पेन नहीं है।

लोपाखिन : आठ रूबल की बोतल है।

(खामोशी)

बेहद ठण्ड है यहां तो।

याशा : आज घर को गर्माया नहीं गया। खैर, हमारी बला से,
हम तो जा ही रहे हैं। (हंसता है)

लोपाखिन : हंस किसलिये रहे हो ?

याशा : खुशी की वजह से।

लोपाखिन : अक्तूबर आ गया है, मगर गर्मी के दिनों की
भांति शान्ति है और धूप खिली है। मकान बनाने के लिये

अच्छा मौसम है। (घड़ी पर नज़र डालकर दरवाज़े की तरफ़ मुंह करके कहता है) महानुभावो, यह ध्यान में रखिये कि गाड़ी के लिये सिर्फ़ छियालीस मिनट बाक़ी रह गये हैं। इसका मतलब यह है कि बीस मिनट बाद स्टेशन को चल देना चाहिये। जल्दी कीजिये।

(ओवरकोट पहने हुए त्रोफ़ीमोव अहाते की तरफ़ से आता है)

त्रोफ़ीमोव : मुझे लगता है कि अब चल देना चाहिये। बग़्घी आ गयी है। शैतान ही जाने कि मेरे गलोश * कहां चले गये। (दरवाज़े की तरफ़ मुंह करके) आन्या, मेरे गलोश यहां नहीं हैं! अभी तक नहीं मिले।

लोपाख़िन : मुझे स्त्राकॉव जाना है। आपके वाली गाड़ी से ही जाऊंगा। जाड़े भर स्त्राकॉव में ही रहूंगा। मैं तो आप लोगों के साथ ही वक़्त बरबाद करता रहा, काम-काज के बिना मन ऊब उठा है। मुझसे निठल्ले तो बैठा ही नहीं जाता, समझ में नहीं आता कि अपने इन हाथों का क्या करूं। ऐसे लगते हैं मानों पराये हों।

त्रोफ़ीमोव : हम लोग तो अभी चले जायेंगे और आप फिर से अपने उपयोगी श्रम में जुट जाइयेगा।

लोपाख़िन : शेम्पेन का एक गिलास पी लो।

त्रोफ़ीमोव : नहीं पिऊंगा।

लोपाख़िन : तो अब मास्को जाओगे ?

त्रोफ़ीमोव : हां, इन्हें शहर तक पहुंचाकर कल मास्को चल जाऊंगा।

* चमड़े के जूतों को कीचड़-पानी से बचाने के लिये उनके ऊपर पहने जानेवाले रबड़ के जूते। - अनु०

लोपाखिन : हां ... शायद वहां प्रोफेसर व्याख्यान नहीं देते होंगे, राह देख रहे होंगे कि तुम कब आते हो !

त्रोफ़ीमोव : तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं।

लोपाखिन : कितने सालों से तुम युनिवर्सिटी में पढ़ रहे हो ?

त्रोफ़ीमोव : कोई नयी बात सोचो। यह पुराना और घिसा-पिटा क्रिस्सा है। (गलोश ढूंढ़ता है) सुनो, शायद हम अब फिर कभी न मिलें, इसलिये जाने से पहले एक सलाह देने की इजाजत चाहता हूं—हाथों को ऐसे नहीं भुलाओ ! हाथों को ऐसे बेकार भुलाते रहने की आदत छोड़ दो। इसी तरह से यह सोचते हुए गर्मियों के बंगले बनाना भी हाथों को बेकार इधर-उधर भुलाने के समान ही है कि कुछ समय बाद यहां बसनेवाले लोग खुदकाश्त बन जायेंगे ... खैर, जो भी हो, मैं तुम्हें चाहता हूं। किसी कलाकार की तरह तुम्हारी पतली-पतली और नाजूक उंगलियां हैं, कोमल और नाजूक आत्मा है ...

लोपाखिन (उसे गले लगाता है) : तो विदा, मेरे दोस्त। सभी कुछ के लिये तुम्हें धन्यवाद। अगर जरूरत हो तो सफ़र के लिये मुझसे कुछ पैसे ले लो।

त्रोफ़ीमोव : मुझे उनका क्या करना है ? कोई जरूरत नहीं।

लोपाखिन : तुम्हारे पास हैं जो नहीं !

त्रोफ़ीमोव : मेरे पास हैं। धन्यवाद। मैंने जो अनुवाद किया था, उसके पैसे मिल गये। ये रहे, जेब में। (परेशान होते हुए) लेकिन मेरे गलोश नहीं मिले !

• **वार्या (दूसरे कमरे से) :** यह ले लीजिये अपना कूड़ा-करकट !
(मंच पर गलोशों का जोड़ा फेंकती है)

त्रोफ़ीमोव : आप ऐसे बिगड़ क्यों रही हैं, वार्या ! हुम ... लेकिन ये तो मेरे गलोश नहीं हैं !

लोपाखिन : मैंने वसन्त में एक हजार से ज़्यादा हेक्टर ज़मीन

में पोस्ता बोया था और अब चालीस हजार का मुनाफ़ा कमाया है। मेरे पोस्ता पर जब फूल आये तो क्या दृश्य था वह ! हां , तो मैं कह रहा था कि मैंने चालीस हजार कमाये हैं और तुम्हें इसलिये उधार देने को तैयार हूं कि ऐसा कर सकता हूं। नाक किसलिये चढ़ाते हो ? मैं तो किसान आदमी हूं ... हेर-फेर नहीं जानता।

त्रोफ़ीमोव : तुम्हारा बाप किसान था , मेरा दवा बेचनेवाला — इससे कोई नतीजा नहीं निकलता।

(लोपाख़िन बटुआ निकालता है)

रहने दो , रहने दो ... अगर तुम मुझे दो लाख भी देना चाहोगे तो भी नहीं लूंगा। मैं आज़ाद आदमी हूं। तुम सब , अमीर-ग़रीब लोग जिस चीज़ को इतना मूल्यवान और महत्वपूर्ण मानते हो , मेरे लिये उसकी ज़रा भी कीमत नहीं , मेरे लिये वह हवा में उड़नेवाली धूल-मिट्टी है। मेरा तुम लोगों के बिना काम चल सकता है , मुझे तुम लोगों की परवाह करने की कोई ज़रूरत नहीं। मुझमें शक्ति है , आत्म-सम्मान है। मानवजाति उस सर्वोच्च सत्य , उस सर्वोच्च सुख-सौभाग्य की ओर बढ़ रही है जो हमारी इस धरती पर सम्भव है और मैं उसकी अगली क़तारों में हूं !

लोपाख़िन : तुम वहां पहुंच जाओगे ?

त्रोफ़ीमोव : पहुंच जाऊंगा।

(ख़ामोशी)

खुद पहुंच जाऊंगा या फिर दूसरों को पहुंचने का रास्ता दिखा दूंगा।

(दूरी पर कुल्हाड़े से वृक्ष के काटे जाने की आवाज़ सुनाई देती है)

लोपाखिन : तो विदा , मेरे दोस्त । चलने का वक्त हो गया । हम एक-दूसरे के सामने अपनी अकड़ दिखा रहे हैं , जबकि ज़िन्दगी अपनी चाल से चलती जा रही है । जब मैं थके बिना लगातार घण्टों काम करता हूँ तो मेरे दिमाग को बड़ा चैन मिलता है और लगता है कि मैं भी अपने जीवन का लक्ष्य जानता हूँ । लेकिन मेरे भैया , कितने ऐसे लोग हैं रूस में , जो मालूम नहीं किसलिये जीते हैं । खैर , काम तो उनके बिना भी चलता ही रहता है । सुना है कि लेओनीद अन्द्रेयेविच ने बैंक में छः हजार मालाना की नौकरी कर ली है ... मगर उनसे यह नौकरी निभेगी नहीं , बहुत काहिल हैं वह ...

आन्या (दरवाज़े पर आकर) : अम्मां आपसे अनुरोध करती हैं कि उनके यहां से जाने तक पेड़ों को न काटा जाये ।

त्रोफ़ीमोव : हां , कम से कम इतनी अकल तो होनी चाहिये ... (ड्योढ़ी में से जाता है)

लोपाखिन : अभी , अभी रोक देता हूँ ... सचमुच बड़ी बेवकूफी है । (उसके पीछे-पीछे जाता है)

आन्या : फ़ीर्स को अस्पताल भेज दिया गया ?

याशा : मैंने सुबह कह दिया था । भेज दिया गया होगा ।

आन्या (हॉल में से गुज़रते हुए येपिखोदोव से) : सेम्योन पनतेलेयेविच , कृपया यह पता कीजिये कि फ़ीर्स को अस्पताल भेज दिया गया या नहीं ।

याशा (बुरा मानते हुए) : मैंने आज सुबह येगोर से कह दिया था । दस बार पूछने की क्या बात है !

येपिखोदोव : बहुत बूढ़ा हो चुका है फ़ीर्स और उसके बारे में मेरी अन्तिम राय यह है कि दवा-दारू से अब उसका कुछ

भला नहीं होगा, उसे तो अपने बाप-दादा के पास पहुंच जाना चाहिये। मुझे तो उससे केवल ईर्ष्या ही हो सकती है। (गत्ते के टोपीवाले डिब्बे पर सूटकेस रखता है और उसे कुचल डालता है) लो, टूट गया। मैं जानता था कि यही होगा। (जाता है)

याशा (मज्जाक्र उड़ाते हुए) : नित नयी मुसीबत ...

वार्या (दरवाजे के पीछे से) : फ्रीर्स को अस्पताल पहुंचा दिया गया ?

आन्या : हां, पहुंचा दिया गया।

वार्या : तो डाक्टर के नाम खत क्यों नहीं ले गये ?

आन्या : हमें अभी जल्दी से भेज देना चाहिये ... (जाती है)

वार्या (बगल के कमरे से) : याशा कहां है ? उससे कहिये कि उसकी मां उसके जाने के पहले उससे मिलने आयी है।

याशा (हाथ झटकता है) : किसी के भी सब्र का प्याला छलक सकता है।

(दुन्याशा सामान को ठीक-ठाक करने में व्यस्त रहती है। याशा के अकेले रह जाने पर वह उसके पास आती है)

दुन्याशा : काश, मेरी तरफ एक बार देख ही लेते, याशा। तुम जा रहे हो ... मुझे छोड़कर जा रहे हो, याशा ... (रोती है और उसके गले में बांहें डाल देती है)

याशा : रोने की क्या बात है ? (शोम्पेन पीता है) छः दिन बाद मैं फिर से पेरिस पहुंच जाऊंगा। कल एक्सप्रेस गाड़ी में बैठेंगे और मानो उड़ते चले जायेंगे। मुझे तो यकीन ही नहीं होता। फ्रांस जिन्दाबाद !.. यह जगह मेरे लायक नहीं, मैं यहां नहीं रह सकता ... कोई चारा नहीं। बहुत जहालत देख ली यहां — काफ़ी है। (शोम्पेन पीता है) रोने की क्या बात है ? ढंग की जिन्दगी बिताओ और तब रोना नहीं पड़ेगा।

दुन्याशा (जेबी दर्पण में अपने चेहरे को देखते हुए पाउडर लगाती है) : पेरिस से पत्र भेजना। मैं तो तुमको प्यार करती थी, बहुत प्यार करती थी, याशा ! बड़ी नाजुक हूं मैं, याशा !

याशा : लोग ड़धर आ रहे हैं। (सूटकेसों के पास अपनी व्यस्तता दिखाने लगता है, धीरे-धीरे गुनगुनाता है)

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, गायेव, आन्या और शर्लोत्ता आते हैं)

गायेव : हमें अब चलना चाहिये। बहुत थोड़ा वक्त रह गया है। (याशा की तरफ़ देखकर) यह हेरिंग मछली की बू किससे आ रही है ?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : दस मिनट के बाद हमें बग्घी में बैठ जाना चाहिये ... (कमरे में नज़र घुमाकर) विदा, हमारे प्यारे घर, हमारे बूढ़े दादा। जाड़ा बीतेगा, वसन्त आयेगा और तब तुम नहीं रहोगे, तुम्हें तोड़ दिया जायेगा। कितना कुछ देखा है इन दीवारों ने ! (बेटी को जोर से चूमती है) मेरी लाइली, मेरी दौलत, तुम बहुत खुश नज़र आ रही हो, तुम्हारी आंखें तो दो हीरों की तरह चमक रही हैं। तुम खुश हो ? बहुत खुश हो ?

आन्या : बहुत ! नयी ज़िन्दगी शुरू हो रही है, अम्मां !

गायेव (प्रसन्नता से) : सचमुच अब सब कुछ बहुत अच्छा है। चेरी की बगिया के बिकने तक हम सब बहुत चिन्तित रहे, परेशान रहे। किन्तु जब मामला आखिरी तौर पर, अन्तिम रूप में तय हो गया तो सब को राहत मिल गयी, कुछ खुशी भी हुई ... मैं अब बैंक का क्लर्क हूं, महाजनी करता हूं ... पीला गेंद बीच की पाकेट में। बहन ल्यूबा, अब तो तुम भी निश्चय ही पहले में अच्छी दिख रही हो।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : हां। यह सच है कि मेरा मन पहले से शान्त है।

(उसे ओवरकोट और टोपी दी जाती है)

मुझे नींद अच्छी आती है। याशा, मेरी चीजें ले चलो। जाने का वक्त हो गया। (आन्या से) मेरी बिटिया, हम जल्द ही मिलेंगी... मैं पेरिस जा रही हूं, वहां उन पैसों से गुजारा करूंगी जो तुम्हारी यारोस्लाव्वा वाली नानी ने जागीर खरीदने को भेजे थे — ज़िन्दा-बाद तुम्हारी नानी ! लेकिन इन पैसों से बहुत दिनों तक काम नहीं चलेगा।

आन्या : अम्मां, तुम जल्दी, बहुत जल्दी लौट आओगी... ठीक है न ? मैं हाई स्कूल के इम्तहान की तैयारी करूंगी, उसे पास करके काम करने लगूंगी, तुम्हारी मदद करूंगी। अम्मां, हम मिलकर तरह-तरह की किताबें पढ़ा करेंगी... ठीक है न ? (अम्मां के हाथ चूमती है) हम पतभर की शामों में पढ़ा करेंगी, अनेक किताबें पढ़ डालेंगी और हमारे सामने एक नयी, अनूठी दुनिया उभर उठेगी... (स्वप्न-सा देखते हुए) अम्मां, जल्दी लौट आना...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : लौट आऊंगी, मेरी हीरे-सी बिटिया। (बेटी को बांहों में भरती है)

(लोपाखिन आता है, शर्लोत्ता धीरे-धीरे कोई गीत गुनगुनाती है)

गायेव : शर्लोत्ता खुश है ! गा रही है !

शर्लोत्ता (लिपटे-लिपटाये बच्चे जैसा लगनेवाला एक बंडल लेकर) : सो, मेरे मुन्ने, सो...

(बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई देती है : “ हुआं-हुआं ! ”)

चुप हो जा, मेरे अच्छे, मेरे प्यारे मुन्ने।

(हुआ-हुआ !)

मुझे बड़ा तरस आ रहा है तुम पर ! (बंडल को वापस उसकी जगह पर फेंक देती है) तो आप लोग कृपया , मेरे लिये नौकरी ढूँढ़ दें। मेरा ऐसे काम नहीं चल सकता।

लोपाखिन : ढूँढ़ देंगे नौकरी , शर्लोत्ता इवानोव्ना। कुछ चिन्ता नहीं करें।

गायेब : सब हमें छोड़कर जा रहे हैं , वार्या भी जा रही है ... अचानक किसी को भी हमारी जरूरत नहीं रही।

शर्लोत्ता : शहर में मेरे रहने की कोई जगह नहीं। इसलिये जाना ही होगा ... (गुनगुनाती है) खैर , कोई बात नहीं ...

(पीश्चिक आता है)

लोपाखिन : लीजिये , आ गया कुदरत का एक अजूबा ! ..

पीश्चिक (हाँफते हुए) : ओह , ज़रा सांस लेने दीजिये ... बुरा हाल है मेरा ... मेरे बहुत अच्छे मित्रो ... मुझे पानी दीजिये ...

गायेब : शायद पैसों की जरूरत है ? आपका यह सेवक तो मुसीबत से दूर ही रहना चाहता है ... (जाता है)

पीश्चिक : बहुत दिनों से आपके यहां नहीं आया ... अनूठी सुन्दरी ... (लोपाखिन से) तुम भी यहां हो ... मिलकर खुशी हुई ... क्या ग़ज़ब का दिमाग पाया है तुमने ... यह लो ... सम्भालो ... (लोपाखिन को रक़म देता है) चार सौ रूबल ... मेरे सिर पर तुम्हारा आठ सौ चालीस रूबल का क़र्ज़ रह गया ...

लोपाखिन (हैरानी से कंधे झटकता है) : यह तो जैसे कोई सपना ही हो ... कहां से मिले ?

पीश्चिक : ज़रा ठहरो ... बड़ी गर्मी लग रही है ... बड़ी असाधारण घटना घटी है। मेरे यहां कुछ अंग्रेज़ आये और मेरी ज़मीन

में उन्हें कोई सफ़ेद मिट्टी मिल गयी ... (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से)
 और ये चार सौ आपकी नज़र हैं, अद्भुत, अतीव सुन्दरी ...
 (पैसे देता है) बाक़ी बाद में। (पानी पीता है) रेल के
 डिब्बे में अभी-अभी एक नौजवान कह रहा था कि मानो कोई
 बहुत बड़ा दार्शनिक छत से कूदने की सलाह देता है ... “कूद
 जाओ ! ” उसका कहना है और इसी में जीवन का सार है।
 (हैरानी से) ज़रा ग़ौर कीजिये ! पानी ! ..

लोपाख़िन : कौन अंग्रेज़ थे ये ?

पीशिचक : मैंने सफ़ेद मिट्टीवाली ज़मीन का टुकड़ा उन्हें चौबीस
 सालों के लिये पट्टे पर दे दिया ... और अब माफ़ी चाहता हूं,
 रुक नहीं सकता ... भटपट आगे जाना चाहिए ... ज़नोइकोव
 के यहां जाऊंगा ... कर्दामोनोव के यहां जाऊंगा ... सभी का तो
 कर्ज़दार हूं ... (पानी पीता है) अलविदा ... बृहस्पति को
 आऊंगा ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : हम तो अभी शहर जा रहे हैं और मैं कल
 विदेश के लिये रवाना हो जाऊंगी ...

पीशिचक : क्या मतलब ? (परेशान होकर) किसलिये शहर
 जा रही हैं ? हां, हां, यह फ़र्नीचर ... सूटकेस ... ख़ैर, कोई
 बात नहीं ... (आंसू भरकर) कोई बात नहीं ... बहुत ग़ज़ब का
 दिमाग़ है ... इन अंग्रेज़ों का ... कोई बात नहीं ... सुखी रहिये ...
 भगवान आपकी मदद करेगा ... कोई बात नहीं ... इस दुनिया में
 हर चीज़ का अन्त होता है ... (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना का हाथ चूमता
 है) कभी आपको यह भी ख़बर मिलेगी कि मैं इस दुनिया में
 नहीं रहा, आपको यह ... घोड़ा याद आ जायेगा और आप
 कहेंगी : “ इस दुनिया में कोई एक होता था — सिमेओनोव-पीशिचक ...
 भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे ” ... बहुत ही प्यारा मौसम है ...
 हां ... (बहुत विह्वल होकर जाता है, किन्तु उसी क्षण लौटता

है और दरवाजे के पास से कहता है) मेरी बिटिया दाशा ने आपको नमस्कार कहा है ! (जाता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : अब हम चल सकते हैं। मैं अपने मन में दो चिन्तायें लिये जा रही हूं। मेरी पहली चिन्ता तो बीमार फ्रीर्स के बारे में है। (घड़ी पर नज़र डालती है) पांच मिनट और रुका जा सकता है ...

आन्या : अम्मां , फ्रीर्स को तो अस्पताल भेजा जा चुका है। याशा ने सुबह भेज दिया था।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मेरी दूसरी परेशानी है - वार्या। वह तड़के ही उठकर काम में जुट जाने की आदी है और अब काम न होने पर ऐसे ही महसूस करती है जैसे पानी के बिना मछली ! वह दुबला और मुरझा गयी है और बेचारी रोती रहती है ...

(खामोशी)

आप तो यह अच्छी तरह से जानते हैं , येर्मोलाई अलेक्सेयेविच। मैं तो यही सपना देखती रही कि उसकी आपसे शादी करूंगी। सभी बातों से ऐसा लगता भी था कि आप उससे शादी कर लेंगे। (वह फुसफुसाकर आन्या के कान में कुछ कहती है , वह शर्लोट्टा को संकेत करती है और दोनों बाहर चली जाती हैं) वह आपको प्यार करती है , आपको भी वह अच्छी लगती है और इसलिये समझ नहीं पाती कि आप दोनों क्यों एक-दूसरे से कन्नी काटते हैं। मैं यह समझने में असमर्थ हूं !

• लोपाखिन : सच कहूं तो मैं खुद भी यह नहीं समझ पाता हूं। बड़ा अजीब-सा मामला है यह सब ... अगर कुछ वक्त है तो मैं तो इस समय भी तैयार हूं ... लाइये , अभी यह काम कर डालें - और क्रिस्ता खत्म। मैं अनुभव करता हूं कि आपके बिना मैं विवाह का प्रस्ताव नहीं कर पाऊंगा।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह तो बहुत अच्छी बात है। इसके लिये तो एक मिनट ही चाहिये। मैं उसे अभी बुला लेती हूं...

लोपाखिन : और शेम्पेन भी है। (गिलासों की तरफ़ देखकर)
ये तो खाली हैं , किसी ने सारी शेम्पेन पी डाली।

(याशा खांसता है)

इसे कहते हैं बिल्ली की तरह सब कुछ चाट जाना।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (खुश होकर) : बहुत खूब। हम बाहर चले जाते हैं ... याशा , चलो। मैं उसे बुलाती हूं ... (दरवाज़े की ओर मुंह करके) वार्या , सारा काम-धाम छोड़कर यहां आओ। जल्दी से ! (याशा के साथ बाहर जाती है)

लोपाखिन (घड़ी पर नज़र डालकर) : हां , यह बात है ...

(खामोशी)

(दरवाज़े के पीछे दबी हंसी , फुसफुसाहट सुनाई देती है।
आखिर वार्या आती है)

वार्या (देर तक सामान को देखती रहती है) : अजीब मामला है , कहीं मिल ही नहीं रही ...

लोपाखिन : आप क्या ढूंढ़ रही हैं ?

वार्या : मैंने खुद ही उसे सामान में बांधा था और अब याद नहीं कर पा रही।

(खामोशी)

लोपाखिन : वर्रा मिस्राइलोव्ना , अब आप कहां जाने की सोच रही हैं ?

वार्या : मैं ? रागूलिन परिवार में जा रही हूं ... उनके यहां घर-गिरस्ती के प्रबन्ध की नौकरी तय कर ली है ... आप घर की मैनेजर कह सकते हैं।

लोपाखिन : ये लोग तो याशनेवो में रहते हैं न ? यहां से कोई पचासेक मील दूर।

(खामोशी)

तो इस घर में ज़िन्दगी ख़त्म हो गयी ...

वार्या (सामान को देखते हुए) : कहां रख दिया मैंने उसे ... या शायद सन्दूक में बन्द कर दिया ... हां , इस घर में ज़िन्दगी ख़त्म हो गयी ... नहीं होगी अब यहां ज़िन्दगी ...

लोपाखिन : मैं अभी ख़ार्कोव जा रहा हूं ... इसी गाड़ी से। बहुत सारे काम हैं। यहां येपिखोदोव पर सारी ज़िम्मेदारी छोड़े जा रहा हूं ... मैंने उसे अपने यहां रख लिया है।

वार्या : अच्छा किया।

लोपाखिन : शायद आपको याद हो , पिछले साल इसी वक्त बर्फ़ गिर रही थी , लेकिन अब शान्ति है , धूप खिली हुई है। हां , ठण्ड ज़रूर है ... शून्य से तीन दर्जे नीचे होगा तापमान।

वार्या : मैंने देखा नहीं।

(खामोशी)

फिर हमारा तापमापी तो टूटा हुआ है ...

(खामोशी)

(अहाते की ओर से दरवाज़े पर आवाज़ सुनाई देती है :
“ येर्मोलाई अलेक्सेयेविच ! .. ”)

लोपाखिन (मानो बहुत देर से इस आवाज़ का इन्तज़ार कर रहा हो) : अभी आ रहा हूं ! (जल्दी से जाता है)

(वार्या फ़र्श पर बैठकर तथा कपड़ों के एक बंडल पर सिर टिकाकर धीरे-धीरे सिसकती है। दरवाज़ा खुलता है और ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना सावधानी से भीतर आती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तो ?

(खामोशी)

हमें चलना चाहिये।

वार्या (जिसने आंखें पोंछ ली हैं और रोती नहीं है) : हां, चलना चाहिये, अम्मां। अगर गाड़ी मिल गयी तो मैं आज ही रागूलिन परिवार में पहुंच जाऊंगी...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (दरवाज़े के पास जाकर) : आन्या, कपड़े पहन लो !

(आन्या, 'उसके बाद गायेव और फिर शर्लॉत्ता इवानोव्ना आते हैं। गायेव कनटोपेवाला गर्म ओवरकोट पहने है। नौकर और कोचवान भी आ जाते हैं। येपिखोदोव सामान के आस-पास दौड़-धूप करता दिखाई देता है)

अब हम रवाना हो सकते हैं।

आन्या (खुशी से) : रवाना हो सकते हैं !

गायेव : मेरे मित्रो, मेरे प्यारे, मेरे अच्छे दोस्तो ! हमेशा के लिये इस घर को छोड़ते हुए क्या मैं चुप रह सकता हूं, क्या मैं विदा होते समय उन भावनाओं को व्यक्त किये बिना रह सकता हूं जो मेरे मन में उमड़-धुमड़ रही हैं ...

आन्या (मिनत करते हुए) : मामा जी !

वार्या : मामा जी , इसकी जरूरत नहीं है !

गायेब (उदासी से) : पीला गेंद बीच की पाकेट में ... मैं चुप हूँ ...

(त्रोफ़ीमोव , उसके बाद लोपाख़िन का प्रवेश)

त्रोफ़ीमोव : तो महानुभावो , चलें !

लोपाख़िन : येपिख़ोदोव , मेरा ओवरकोट !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मैं यहां एक मिनट और बैठना चाहती हूँ । पहले तो मैंने मानो कभी यह देखा ही नहीं था कि इस घर की दीवारें कैसी हैं , छतें कैसी हैं और अब मैं उन्हें बड़े चाव से , मृदु प्यार से देख रही हूँ ...

गायेब : मुझे याद है कि जब मैं सिर्फ़ छः साल का था तो इसी खिड़की में बैठे हुए कैसे मैंने ट्रिनिटी पर्व के दिन पिता जी को गिरजाघर जाते देखा था ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : सभी चीज़ें ले लीं न ?

लोपाख़िन : लगता तो ऐसा ही है कि सभी चीज़ें ले लीं । (ओवरकोट पहनते हुए येपिख़ोदोव से) येपिख़ोदोव , तुम इस बात का ध्यान रखना कि यहां किसी तरह की कोई गड़बड़ न हो ।

येपिख़ोदोव (खरखरी आवाज़ में) : आप कोई फ़िक्र नहीं करें , येर्मोलाई अलेक्सेयेविच !

लोपाख़िन : यह तुम्हारी आवाज़ को क्या हो गया ?

येपिख़ोदोव : अभी-अभी पानी पिया था , शायद कोई चीज़ निगल गया ।

याशा (तिरस्कारपूर्वक) : गंवारपन ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : हम चले जायेंगे और यहां कोई भी नहीं रह जायेगा ...

लोपाखिन : वसन्त तक ।

वार्या (बंडल में से इतने जोर से छाता निकालती है कि ऐसे प्रतीत होता है मानो किसी को मारना चाहती हो । लोपाखिन ऐसे जाहिर करता है मानो डर गया हो) : डर किसलिये गये , किसलिये ... मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था ।

त्रोफ़ीमोव : चलिये , चलकर बग्घी में बैठें ... वक्त हो गया ! जल्द ही गाड़ी आ जायेगी !

वार्या : पेट्या , ये रहे सूटकेस के पास आपके गलोश । (आंसू भरकर) उफ़ , कितने गन्दे , कितने पुराने हैं ये ...

त्रोफ़ीमोव (गलोश पहनकर) : तो आइये , अब चलें ।

गायेव (अत्यधिक विह्वलता अनुभव करते और इस बात से डरते हुए कि कहीं रुलाई न आ जाये) : गाड़ी ... स्टेशन ... बीच के गेंद को मारो , सफ़ेद को कोनेवाली पाकेट में डालो ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : आइये , चलें !

लोपाखिन : सभी यहां हैं न ? वहां तो कोई नहीं रह गया ? (बार्थी ओर के बग़लवाले कमरे में ताला लगाता है) सारी चीजें तो यहीं हैं , इसलिये इसे तो ताला लगाना ही चाहिये । आइये , चलें ! ..

आन्या : विदा घर ! विदा , पुरानी ज़िन्दगी !

त्रोफ़ीमोव : स्वागत , नयी ज़िन्दगी ! .. (आन्या के साथ जाता है)

(वार्या कमरे में सभी ओर नज़र दौड़ाती है और धीरे-धीरे बाहर जाती है । याशा तथा कुत्ते के साथ शर्लॉत्ता भी बाहर जाते हैं)

लोपाखिन : तो मतलब यह कि वसन्त तक के लिये विदा । चलिये , बाहर चलिये ... फिर भेंट होने तक विदा ! .. (जाता है)

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना और गायेव ही रह जाते हैं। ये दोनों मानो इसी की प्रतीक्षा में थे, एक-दूसरे के गले लगाकर इस कारण धीरे-धीरे, घुटी-घुटी आवाज़ में सिसकते हैं कि किसी और को उनकी सिसकियां सुनाई न दे जायें)

गायेव (हताशा से) : मेरी बहन, मेरी बहन ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : ओ मेरी प्यारी, मेरी अनूठी, मेरी सुन्दर चेरी की बगिया ! .. मेरी ज़िन्दगी, मेरी जवानी, मेरी खुशी, विदा ! .. विदा ! ..

(आन्या खुशीभरी आवाज़ में पुकारती है : “ अम्मां ! .. ”
त्रोफ़ीमोव का उल्लास और उत्साहपूर्ण स्वर : “ हो-हो ! ”)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : आखिरी बार दीवारों और खिड़कियों पर नज़र डाल लूं ... मेरी दिवंगता मां को इस कमरे में इधर-उधर टहलना बहुत अच्छा लगता था ...

गायेव : मेरी बहन, मेरी बहन ! ..

(आन्या की आवाज़ : “ अम्मां ! ”
त्रोफ़ीमोव की आवाज़ : “ हो-हो ! ”)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : हम आ रहे हैं ! ..

(बाहर जाते हैं)

(मंच खाली रह जाता है। सभी दरवाज़ों के ताले बन्द करने और उसके बाद बगिचों के जाने की आवाज़ें सुन पड़ती हैं। निस्तब्धता छा जाती है। इस नीरवता में पेड़ पर कुल्हाड़ी चलने की घुटी-घुटी, एकमात्र और उदासीभरी आवाज़ सुनाई देती है।

किसी के पैरों की आहट होती है। दायीं ओर के दरवाजे पर फ्रीस नज़र आता है। वह सदा की भांति कोट और सफ़ेद जाकेट पहने है, उसके पैरों में स्लीपर हैं। वह बीमार है)

फ्रीस (दरवाजे के पास जाकर उसकी हथ्थी को छूता है) : ताला लगा है। सब चले गये ... (सोफ़े पर बैठ जाता है) किसी को भी मेरा ध्यान नहीं रहा ... ख़ैर, कोई बात नहीं ... मैं थोड़ी देर यहां बैठता हूं ... लेओनीद अन्द्रेयेविच ने तो, शायद फ़र-कोट नहीं पहना होगा, हल्के कोट में ही चले गये होंगे ... (चिन्ता से गहरी सांस लेता है) मैंने भी ध्यान नहीं किया ... जवान लोग कुछ नहीं समझते ! (कुछ बड़बड़ाता है जो समझ में नहीं आता) जीवन तो ऐसे बीत गया मानो जिया ही नहीं। (लेट जाता है) थोड़ी देर लेट लेता हूं ... तन में जान तो रही नहीं, कुछ भी नहीं रहा, कुछ भी ... अरे ओ ... बौड़म ! ..

(कहीं दूर से, मानो आकाश से कोई तार टूटने की दर्दिली आवाज़ सुनाई देती है जो धीरे-धीरे लुप्त हो जाती है। गहरा सन्नाटा छा जाता है और उसमें दूरी पर बगिया में पेड़ पर कुल्हाड़ी चलने की ही आवाज़ सुनाई देती रहती है)

(परदा गिरता है)

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी। हमारा पता है :

रादुगा प्रकाशन

१७, जूबोव्स्की बुल्वार ,
मास्को, सोवियत संघ

А. Чехов. Пьесы (на языке хинди).
Перевод сделан по изданию:
А. П. Чехов. Полное собрание сочи-
нений и писем в 30 тт. М., 1977 г.
Редактор русского текста К. Т. Бог-
данова.



'गंगाचिल्ली' नाटक के दूसरे अंक का दृश्य।



‘गंगाचिल्ली’। अ० प० चेखोव नाटक में भाग लेनेवालों के साथ।







अ० प० चेखोव।

‘गंगाचिल्ली’ नाटक के दूसरे अंक का दृश्य।
पोलीना अन्द्रेयेव्ना—ये० म० रायेव्काया,
दोर्न—अ० ल० विश्नेव्स्की।



‘गंगाचिल्ली’ नाटक के चौथे अंक का दृश्य।



‘तीन बहनें’। वेर्शीनिन – क० स० स्तानिस्लाव्की।



‘तीन बहनें’। माशा - ओ० ल० कनीप्पेर।





‘तीन बहनें’ नाटक के चौथे अंक का दृश्य ।

•
• चेबुतीकिन – आ० र० अर्तम ।

सोल्योनी – ल० म० लेओनीदोव ।

कुलीगिन – अ० ल० विश्नेव्स्की ।

ओल्गा – म० ग० सवीत्स्काया ।







‘चेरी की बगिया’ नाटक के पहले अंक का दृश्य।
गायेव, - क० स० स्तानिस्लाव्स्की, आन्या - म० प० लीलाना।

येपिखोदोव - इ० म० मोसक्वीन।

‘चेरी की बगिया’ नाटक के दूसरे अंक का दृश्य।
त्रोफीमोव - व० इ० काचालोव, आन्या - म० प० लीलाना।

रानेव्काया - ओ० ल० क्नीप्पेर।



‘चेरी की बगिया’ नाटक के तीसरे अंक का दृश्य।







‘चेरी की बगिया’ नाटक के पहले अंक का दृश्य, १९५८।

‘चेरी की बगिया’ नाटक के तीसरे अंक का दृश्य, १९५८।

गनेव्काया - आ० क० तारासोवा, लोपाखिन - म० न० ज़िमीन।



रानेव्स्काया - ओ० ल० क्नीप्पेर, आन्या - म० प० लील्लिना,
त्रोफ़ीमोव - व० इ० काचालोव।

